विजयदीप

राजभाषा पत्रिका 2024

अंक 1

कराबी निगम क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा आश्रितजनों को हितलाभ का वितरण

आश्रितजनों को राहत पहुँचाने व उनके सुरक्षित भविष्य के लिए पेंशन राशि का भुगतान

संरक्षक

श्री ए. वेणु गोपाल
क्षेत्रीय निदेशक(प्रभारी)

संपादक

श्री प्रणव कुमार
उप निदेशक(राजभाषा)

सह संपादक

श्रीमती सुनीता कुमारी शर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादन सहयोग

श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी, सहायक

श्री वाई. श्रीराम, सहायक

श्री विजय कुमार, सहायक

श्री एस. मुथ्याला नायडू
आई.टी. प्रबंधक

संपादकीय

हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र की गरिमा और गौरव का प्रतीक है। इसका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। हिंदी के माध्यम से हम अपने विचारों को और अधिक स्पष्टता से व्यक्त कर सकते हैं। हमारी राजभाषा में सरकारी कामकाज को लक्ष्यबद्ध किया गया है तथा इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हम सब प्रतिबद्ध हैं। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु तथा कर्मचारियों व अधिकारियों में हिन्दी भाषा के प्रति सृजनशीलता एवं मौलिकता को बढ़ाने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा इस हिंदी पत्रिका "विजयदीप" का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न कर्मचारियों एवं अधिकारियों से प्राप्त नित नए विचारों का संग्रहण सम्मिलित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा सिर्फ राजभाषा के कार्यों में ही लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कटिबद्ध नहीं है बल्कि हितलाभ के कार्यों में, जो कि इसकी स्थापना का मौलिक उद्देश्य है, भी नित नई ऊँचाईयों को छू रहा है। पत्रिका में इससे संबंधित लेख भी शामिल हैं जिसे पढ़कर आप हमारी योजना की उपकारिता एवं सात्विकता से भी परिचित होंगे।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका में संकलित विभिन्न लेख, कविताएँ, कहानियाँ तथा अन्य विचारों से आप सभी लाभान्वित होंगे। साथ ही इस पुस्तक के प्रकाशन में शामिल सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ। पाठकों से उनके सुझाव की कामना भी करता हूं ताकि यह पत्रिका निरन्तर नई ऊंचाईयों को छू सके और हमेशा आपका मनोरंजन व ज्ञानवर्धन कर सके।

प्रणव कुमार
उप निदेशक (राजभाषा)
pranava.kumar@esic.nic.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का दायित्व संबंधित लेखक का है।

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा–हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

अनुक्रमिका

क्र.सं.	विषय	पेज
1	संदेश–डॉ राजेन्द्र कुमार	4
2	संदेश–श्री रत्नेश कुमार गौतम	5
3	संरक्षक की कलम से...	6
4	क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा में आधार सीडिंग	7
5	कराबी निगम द्वारा लाभार्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए लिए गए कुछ महत्वपूर्ण कदम	8
6	मेरी विजयवाड़ा यात्रा	9–10
7	मुंबई पर्यटन	11
8	मेरी द्वारका यात्रा	12
9	जागृति	13
10	मैं और मेरी कमाई	14
11	दक्षिण का कैलाश	15
12	विजयवाड़ा गीत एवं राजभाषा कविता	16
13	दोष नहीं, अच्छाइयां खोजें	17
14	मेरी भावना	18
15	महेंद्र सिंह धोनी–विश्व प्रसिद्धि से पूर्व से परिचित	19–20
16	कर्मचारी राज्य बीमा निगम–अब तक का सफर	21–22
17	कराबी योजना के अंतर्गत कोविड राहत	23
18	क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा प्रदत्त आश्रितजन हितलाभ	24–25
19	वो दिन ही अच्छे थे	26
20	चाह	27
21	मेरा गांव–अनाकापल्ली	28–29
22	प्रेरणा	30
23	क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा में हिंदी टंकण पत्राचार पाठयक्रम परीक्षा में उतीर्ण प्रशिक्षाथियों के नाम और उनके प्राप्तांक	31
24	अतुल्य पूर्वी गोदावरी	32–34
25	आंध्र प्रदेश में कराबी योजना एक नजर में	35–36
26	"वार्षिक कार्यक्रम" के अन्तर्गत वर्णित कुछ महत्वपूर्ण मद	37
27	सम्मान एवं पुरस्कार	38–39
28	उच्चाधिकारियों द्वारा प्रयुक्त कुछ सामान्य टिप्पणियां	40
29	कर्मचारियों द्वारा प्रयुक्त कुछ सामान्य टिप्पणियां	40
30	नराकास प्रतियोगिता में पुरस्कृत कर्मचारी	41
31	मंडाला आर्ट	41
32	विजयवाड़ा में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां	42–46
33	कराबी निगम हितलाभ	47–48

डॉ. राजेंद्र कुमार, भा.प्र.से.
पीएच.डी. (एमआइटी, यू.एस.ए)
महानिदेशक

DR. RAJENDRA KUMAR, I.A.S.
Ph.D. (MIT, U.S.A.)
Director General

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

संदेश

अत्यंत हर्ष की बात है कि क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा अपनी गृह पत्रिका "विजयदीप" का वार्षिक अंक प्रकाशित कर रहा है। पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रसार का समुचित माध्यम तो है ही साथ ही साथ कार्मिकों के विचारों की अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

राजेन्द्र कुमार
डा. राजेन्द्र कुमार

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002 • PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel: (O) 011-23235391, 23232708 | E-mail: dir-gen@esic.gov.in | Website: www.esic.gov.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संदेश

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "विजयदीप" का प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास है। मैं आशा करता हूं हिंदीत्तर भाषी क्षेत्र की यह पत्रिका कार्मिकों के मन में हिंदी के प्रति एक लगाव उत्पन्न करेगी और अधिक से अधिक सहकर्मियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

रत्नेश कुमार गौतम

(रत्नेश कुमार गौतम)

संरक्षक की कलम से...

हिंदी हमारे देश की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। देश का हर कोना हिंदी के माध्यम से ही एक हो पाता है। वैसे तो भारत की सभी भाषाएं भाषायी गुणवत्ता की दृष्टि से अपने आप में संपूर्ण एवं समृद्ध हैं परन्तु संघ सरकार की राजभाषा हिंदी होने का मुख्य कारण इसका व्यापक स्तर पर बोला एवं समझा जाना है। एक सच्चे नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम संघ की राजभाषा नीति के प्रचार–प्रसार एवं सुचारु कार्यान्वयन में अपनी भूमिका को सही से निभाएं।

गृह पत्रिका का प्रकाशन कार्यान्वयन की दिशा में किया गया एक छोटा सा प्रयास है। यह कार्यालय में हिंदीमय वातावरण का सृजन करता है। पत्रिका कार्मिकों द्वारा हिंदी में अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इससे उनकी भाषायी चेतना भी बढ़ती है जो राजभाषा के कार्यान्वयन में एक अह्म भूमिका अदा करती है।

इस तरह हमारी गृह पत्रिका "विजयदीप" का प्रकाशन वास्तव में बड़े ही हर्ष एवं गौरव की बात है। यह भी सुखद है कि इसमें सभी कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। पत्रिका के स्वरुप में और अधिक निखार हेतु सुधी पाठकों के सुझाव आमंत्रित है।

वेणुगोपाल

श्री ए. वेणु गोपाल
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)
कराबीनिगम
विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा में आधार सीडिंग

आधार सीडिंग–बीमित कामगार व उनके आश्रितजन अपने आधार नंबर को कराबी निगम के साथ सीड कर पा सकते हैं, ढेरों लाभ। बीमित कामगार व उनके आश्रितजन को आधार सीडिंग से विभिन्न प्रकार के लाभ मिल रहे हैं, जो निम्नानुसार हैं:

- रोजगार बदलते समय दोबारा पंजीकरण की कोई आवश्यकता नहीं।
- सेवाएँ व लाभ पाने के लिए पहचान की सरलतापूर्वक पुष्टि।
- आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता(आभा) का सृजन।
- विभिन्न अस्पतालों के साथ स्वास्थ्य संबंधित रिकॉर्ड साझा करने में आसानी।
- फाइलों और रिपोर्ट्स को साथ रखने की आवश्यकता नहीं।

अतः आधार सीडिंग बीमित कामगारों के स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा को बेहतर बनाने में सार्थक सिध्द हो रहा है।

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा में आधार सीडिंग के रास्ते में कठिनाईयों के बावजूद कार्यालय द्वारा विभिन्न पहल किए जा रहे हैं। इस दिशा में अब तक क्षेत्रीय कार्यालय ने विशेष प्रगति दर्ज करते हुए कुल 123152 बीमित कामगारों एवं उनके 97341 आश्रिजनों का आधार सीडिंग किया है।

दिनांक 24.04.24 को पूरे भारतवर्ष में यह तीसरे एवं दिनांक 25.04.2024 को पहले स्थान पर रहा और अन्य दिन भी यह कार्यालय शीर्ष पांच में रहा। पुनः दिनांक 08.05.2024 को यह कार्यालय पहले स्थान पर रहा।

महानिदेशक महोदय के निर्देशानुसार इसमें अभी और अधिक सुधार की आवश्यकता है, इसके लिए क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा निरंतर प्रयास कर रहा है। ■

क्षेत्र का नाम	नियोजकों की कुल संख्या	बीमित व्यक्तियों की कुल संख्या	बीमित व्यक्तियों के आधार की गिनती	आश्रितों के आधार की गिनती	कुल आधार सीडिंग की गिनती
क्षे. का.–आध्रं प्रदेश	39936	632060	130479	102308	232787
उ.क्षे.का.–तिरूपति	16391	289610	73345	62538	135883
उ.क्षे.का.–विशाखापट्टनम	21039	395250	77595	68905	146500
कुल	**77366**	**1316920**	**281419**	**233751**	**515170**

(दिनांक 27.05.2024 के अनुसार)

कराबी निगम द्वारा लाभार्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए लिए गए कुछ महत्वपूर्ण कदम

कराबी निगम की 5जी एम्बुलेंस सेवा

यह 5जी एम्बुलेंस–उन्नत 5जी संचार कनेक्शन, जीपीएस ट्रैकिंग सिस्टम और एचएल7 मानकों के अनुरूप रोगी निगरानी उपकरण से सुसज्जित है, जो रोगी के मेडिकल डेटा की वास्तविक समय पर ट्रैकिंग की अनुमति देता है। यह डेटा लगातार कराबी निगम अस्पताल में एआर सक्षम कमांड सेंटर को प्रेषित किया जाता है, जहां अनुभवी विशेषज्ञ डॉक्टर रोगी के महत्वपूर्ण संकेतों की निगरानी करते हैं और आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करते हैं।

एएए+ मोबाइल ऐप

करावी निगम ने ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से रोगी ओपीडी पंजीकरण की प्रक्रिया को सुविधाजनक और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने के लिए 2017 में मोबाइल एप्लिकेशन "AskAnAppointment" (AAA) लॉन्च किया। यह एप्लिकेशन लाभार्थियों के लिए Google Play Store के माध्यम से निःशुल्क उपलब्ध कराया गया है और इसका उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस अंग्रेजी, हिंदी और 06 क्षेत्रीय भाषाओं में भी है। लाभार्थी इस ऐप के माध्यम से अपनी निर्धारित डिस्पेंसरी/अस्पताल में ओपीडी पंजीकरण के लिए पूर्व अपॉइंटमेंट ले सकते हैं और लंबी कतार से बचते हुए प्राथमिकता वाली सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। ऐप उपयोगकर्ता के अनुकूल है और उपयोगकर्ता अपने एंड्रॉइड फोन पर कुछ टैप के साथ करावी निगम के अस्पतालों और औषधालयों में आराम से अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं। अब लंबी कतार में खड़ा नहीं होना पड़ेगा ।

करावी निगम अस्पतालों में कीमोथेरेपी सुविधाएं

केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव ने 31–अगस्त–2023 को ईएसआई निगम की 191वीं बैठक के दौरान देश भर के 30 करावी निगम अस्पतालों में कीमोथेरेपी सेवाओं का शुभारंभ किया। करावी निगम के लिए इन–हाउस कीमोथेरेपी सेवा एक लागत प्रभावी कदम है क्योंकि रेफरल व्यय कम हो जाता है और लाभार्थियों के लिए अपने स्वयं के अस्पतालों में बेहतर सेवा उपलब्धता के साथ उपचार की निरंतरता होती है। किसी बाहरी रेफरल की आवश्यकता नहीं है। करावी निगम की इस पहल से मरीजों को उसी अस्पताल में कीमोथेरेपी प्राप्त करने में मदद मिलेगी जहां वे अन्य चिकित्सा देखभाल प्राप्त कर रहे हैं, जो अधिक सु. विधाजनक है और अतिरिक्त यात्रा की आवश्यकता को कम करता है। इन–हाउस कीमोथेरेपी सेवाओं के विकास से कीमोथेरेपी तक शीघ्र पहुंच हो सकेगी जो कई कैंसर रोगियों के लिए महत्वपूर्ण है। देखभाल की गुणवत्ता में भी सुधार होगा, क्योंकि मरीज को अपने करावी निगम डॉक्टरों से इलाज मिलेगा। इस सुविधा को अब तक कुल 38 करावी निगम अस्पतालों मे शुरू किया गया है।

करावी लाभार्थियों के घरों तक दवा वितरण

करावी निगम ने पात्र लाभार्थियों के घरों तक दवा पहुंचाने की पहल शुरू की है। इस पायलट प्रोजेक्ट को जनवरी 2023 में करावी निगम के सभी 08 मेडिकल कॉलेजों में शुरू किया गया और इस साल दूसरे चरण में सभी करावी निगम अस्पतालों में इसका विस्तार करने का प्रस्ताव है। पात्र लाभार्थी 60 वर्ष से अधिक आयु के होंगे और गंभीर बीमारियों की दवाएं एक समय में 90 दिनों के लिए उनके घर भेजी जा सकती हैं। दवाओं की डोरस्टेप डिलीवरी से वरिष्ठ नागरिकों को घर पर ही दवाएं मिल सकेंगी और उन्हें दवाएं लेने के लिए अस्पताल/डिस्पेंसरी जाने की परेशानी से राहत मिलेगी।

करावी लाभार्थियों के घरों से पैथोलॉजिकल सैम्पल संग्रह

करावी निगम ने पात्र वरिष्ठ लाभार्थियों के घरों से सैम्पल को संग्रह करने के कार्य की शुरुआत की है। इस प्रोजेक्ट को करावी निगम के सभी 08 मेडिकल कॉलेजों में शुरू किया गया है। इस सुविधा के माध्यम से अब घर बैठे करावी निगम के वरिष्ठ लाभार्थियों के नमूनों की जांच की जा सकेगी तथा उनके डोर–स्टेप पर रिपोर्ट पहुंचाया जा सकेगा।

हितलाभों का ऑनलाइन दावा–बीमारी हितलाभ, विस्तारित बीमारी हितलाभ और अस्थायी अपंगता हितलाभ

पात्र लाभार्थी शाखा कार्यालय की यात्रा किए बिना अपने नकद दावे प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे। इसके लिए आईपी पोर्टल पर लॉग इन कर सकते हैं और करावी निगम द्वारा संवितरण के लिए अपने दावे प्रस्तुत कर सकते हैं।

मेरी विजयवाड़ा यात्रा

सुश्री सुनीता कुमारी शर्मा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

आज–कल सरकारी कार्यालयों में स्थानांतरण की ए.जी.टी. पॉलिसी की वजह से हडकंप मचा हुआ है। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक स्थानांतरण हो रहे हैं। मुझे भी स्थानांतरण के लिए विकल्प देना पड़ा और आखिरकार बलि का समय आ ही गया। दिनांक 30.06.23 को विजयवाड़ा स्थानांतरण का आदेश आ गया पर चुकि ग्रिभॉन्स देने का विकल्प खुला था और मेरी बेटी की 10वीं की परीक्षा थी तो सोचा कम से कम बोर्ड की परीक्षा तक का समय ले लिया जाए ताकि इस कक्षा में तो उसे शिफ्टिंग से होने परेशानी न झेलनी पड़े और उसकी पढ़ाई का नुकसान भी न हो पर ऐसा नहीं हुआ और दिनांक 16.10.23 को हमारा स्टैंड रिलीज आ गया एवं अगले दिन रिलीज का आदेश भी। बारह दिन के कार्यग्रहण समय के उपरांत 30.10.23 को मुझे क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा में कार्यग्रहण करना था। परिवार में विचार–विमर्श के बाद यह तय हुआ कि मैं अकेली ही कार्यग्रहण हेतु विजयवाड़ा जाउं और बेटी के स्कूल एवं रहने की व्यवस्था के बाद वापस आकर पूरी तरह से शिफ्टिंग करुं।

खैर दिनांक 29.10.23 को अकेले ही निकल पड़ी मैं अपनी नई कार्य–यात्रा पर। सुबह 7.00 बजे घर से निकली और विजयवाड़ा एयरपोर्ट 2.40 बजे पहुंची पर टैक्सी वाले की मेहरबानी से आधा शहर घुमते हुए कार्यालय के टी.ओ.आर में रुकना था तो क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा पहुंच गई। अब चार बजे आस–पास के होटल में खाना तो उपलब्ध नहीं था तो स्वीगी का सहारा लेना पड़ा। खा–पीकर 6.00 बजे तक बस सो गई क्योंकि पिछली रात बच्चों से बात करते–करते कटी थी, अकेले जो निकलना था। बच्चों को भी अच्छा नहीं लग रहा था। सुबह 2.00 बजे नींद खुली पर फिर थकान की वजह से दोबारा सो गई मैं।

सुबह उठकर तैयार होकर 9.00 बजे तक कार्यालय पहुंच गई। कार्यालय में सभी को जैसे मेरे आने की जानकारी थी। सबने मार्निंग विश किया। जब मैं राजभाषा शाखा में गई तो शाखा से लगे हितलाभ एवं प्रशासन शाखा के कर्मचारियों ने भी मेरा स्वागत किया। राजभाषा(प्रभारी) अधिकारी से मिलने के बाद मैंने कार्यग्रहण रिपोर्ट दे दी। विजयवाड़ा में मै पहले से राजेश्वरी मैम से परिचित थी जिनसे मेरी बातचीत मुख्यालय कार्यालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के माध्यम से मेरी बेटी के स्कूल में दाखिले के सिलसिले में हूई थी। मैंने उनसे मिलना जरुरी समझा। बातचीत के दौरान विजयवाड़ा के लोगो के हिंदी नहीं जानने पर होने वाली व्यावहारिक एवं दैनिक कठिनाईयों पर चिन्ता व्यक्त की। मैडम ने बड़ी सूबसूरत बात कही,– 'मनुष्य को एक–दूसरे को समझने के लिए भाषा की आवश्यकता कभी नहीं रही' ।

संयोग से 30.10.23 को सतर्कता जागरुकता सप्ताह आरम्भ हो रहा था और इसके लिए प्रतिज्ञा लेनी थी तो सभी हॉल में एकत्रित हुए जहां उप निदेशक(रा.भा.प्र.) ने सब से मेरा औपचारिक परिचय करवाया और यथासंभव मेरी मदद करने की अपील की।

स्थानांतरण से संबंधित कुछ सामान्य औपचारिकताओं के बाद कार्यालय के राजभाषा संबंधी कार्यों को खंगालना शुरु किया। लंबित कार्यों को पूरा करने के अलावा दैनिक–आवधिक कार्यों पर भी नजर रखी और इस तरह एक सप्ताह बीत गया। टीओआर मुझे एक सप्ताह के लिए ही मिला था, इसे बढ़ाने के लिए आवेदन दिया था पर शाम के 5.00 बजे तक अवधि–विस्तार की कोई सूचना नहीं मिली थी तो चिन्ता हो रही थी। तभी हमारे पड़ोसी शाखा के अधीक्षक महोदय के खैरियत पूछने पर मैंने आवास की समस्या बताई तो उन्होंने स्थापना शाखा की एक महिला कर्मचारी, जो एक कमरा लेकर रहती थी, के यहां मेरे रहने की व्यवस्था करवा थी। स्थानांतरण के इस कठिन सफर में आस–पास मौजूद अच्छे लोगों की वजह से थोड़ा सुकून महसूस हुआ। हालांकि अलग मकान की व्यवस्था भी मैं कर सकती थी परन्तु मेरी बेटी कक्षा दसवीं की छात्रा है और प्री–बोर्ड्स का समय होने के कारण प्रधानाचार्य महोदय के स्कूल का स्थानांतरण न करने के सलाह को मानने की वजह से बोर्ड की परीक्षा में उसके साथ रहने के लिए जनवरी 2024 से छुट्टियों पर जाने का निर्णय लिया था, सिर्फ दो महीने के लिए मकान की व्यवस्था मुश्किल थी। साथ–ही–साथ एक दिन में मकान तो नहीं मिलता। खाली स्टॉफ क्वार्टस के आवंटन की उम्मीद में अब तक टीओआर में रहने का निर्णय लिया था।

खैर अगले दिन शनिवार की छुट्टी थी, बहुत मुश्किल था अकेले काटना पर किसी तरह कट ही गया। रविवार 5 नवंबर को मेरी बेटी का जन्मदिन था तो हमने शनिवार की रात के 12.00 बजे विडियो कॉल पर रह कर जन्मदिन मनाया, केक काटा और उन्होंने खाया, मन ही मन बेटी के सुखी जीवन के लिए मंगलकामना की। सुबह ईश्वर का आशीर्वाद लेने के इरादे से नजदीक के राम मंदिर में जाने का निश्चय किया। गूगल में 1 कि.मी. ही दिखा रहा था पर रास्ता भटक गई और पूछताछ का सिलसिला शुरु हुआ तो 10 मिनट का सफर 40 मिनट में खत्म हुआ। भाषा की समझ के बिना पूछताछ

का सिलसिला कैसा रहा होगा अंदाजा लगा सकते हैं पर गंतव्य तक पहुंचाने वाला तो था ही। मंदिर पहुंच कर पूजा की। पूजा के बाद बड़ा ही सुकून महसूस किया। इतने वर्षों में कभी ऐसा मौका नहीं आया था जब ऐसे शुभ अवसर पर ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त किया हो। कुछ शहरी जीवन की आपाधापी और कुछ दायित्वों का अतिरिक्त बोझ मुझे इस सुकून से वंचित करता रहा। खैर, आधे घंटे बाद वापस आ गई इस तरह विजयवाड़ा को थोड़ा और देख लिया ।

अगले सप्ताह अतिरिक्त मुस्तैदी से काम करने की चेष्टा की, लंबित रिपोर्ट के आकड़ें एकत्रित करके मासिक रिपोर्ट तैयार किया। इसी बीच राजभाषा अधिकारी(प्र.) से हुई चर्चानुसार मैंने क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा की गृह पत्रिका "विजयदीप" के अगले अंक के लिए भी परिपत्र परिचालित कर दिया। चुंकि मुझे अवकाश पर जाना है तो पत्रिका सामग्री की प्राप्ति के लिए मैंने संपर्क कार्य करने की सोची ताकि पत्रिका प्रकाशन का कार्य समय पर हो सके। उम्मीद के विपरीत (ग क्षेत्र होने के कारण) सभी को उत्साहित पाया। भावों की अभिव्यक्ति अपनी भाषा में आसान होती है पर फिर भी मुझे कहीं से भी ऐसा नहीं लगा कि कर्मचारियों के उत्साह में कोई कमी है।

कार्यालयीन कार्यों में उनका सहयोग तो अति सराहनीय है। उनकी उर्जा देख आप भी अपनी थकान भूल जायेंगे। इसके अतिरिक्त आपको व्यक्तिगत सहयोग देने में भी पीछे नहीं हटते। सहयोगात्मक माहौल में मेरे स्थानांतरण का यह सफर सुखद रहेगा ऐसी उम्मीद है मुझे।

अब दिसंबर का आखिरी सप्ताह है और पत्रिका अपने अंतिम चरण में है। और भी बहुत कुछ हुआ जो मैं आपके साथ शेयर करना चाहती हूं पर एक विशेष बात जो मैं आपसे बिना शेयर किए नहीं रह सकती–वह है विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की समाप्ति के बाद क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी) महोदय का वक्तव्य। उन्होंने मुझसे कहा–"मुझे खुशी है कि आपने इतने कम समय में इतना कार्य किया, मुझे उम्मीद है आगे भी आप ऐसे हीं अपना कार्य करेगीं जिससे आने वाले समय में हमारा कार्यालय राजभाषा के कार्य में नए आयाम हासिल करेगा।" ■

मुंबई पर्यटन

श्री एस. अब्दुल करीम
उच्च श्रेणी लिपिक

यात्रा हमारे जीवन के सबसे सुखद और मूल्यवान अनुभवों में से एक है जिससे हमारा ज्ञान बढ़ता है, हमारे सोचने–समझने की शक्ति में इजाफा होता है। दुनिया में बहुत से ऐसे जगह हैं जो हमारी यात्रा–वृति को संतुष्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर हम कला, ऐतिहासिक स्थलों, पुरातात्विक खजानों के माध्यम से किसी अन्य संस्कृति के बारे में जानने के एक अद्वितीय और यादगार अनुभव की तलाश में हैं तो निश्चित रूप से मुंबई से बेहतर कोई जगह नहीं हो सकता। मुंबई का पुराना नाम बंबई है, यह भारत के महाराष्ट्र राज्य की राजधानी है। आबादी की दृष्टि से दिल्ली के बाद यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा शहर है।

बचपन से ही भूगोल में रुचि होने के कारण मेरी हमेशा इच्छा रहती थी कि लंबे समय के लिए नहीं तो कम से कम थोड़े समय के लिए ही नए जगहों की यात्रा करूँ। चूंकि मेरे पिता भारतीय रेलवे में काम करते हैं इसलिए मुझे उनके साथ विशेषाधिकार प्राप्त रेलवे पास के तहत उत्तरी और दक्षिणी भारत के कुछ खूबसूरत स्थानों जैसे दिल्ली, आगरा, जयपुर, बंगलौर, चेन्नई, मैसूर, हैदराबाद, ऊटी, गुड़गांव आदि की यात्रा ट्रेन से करने का सौभाग्य मिला। जैसे–जैसे मैं अपना करियर बनाने में व्यस्त हो गया, मेरी यात्राओं में कमी आती गई। लेकिन विभिन्न स्थानों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने की मेरी चाह अभी भी बनी हुई है।

पाँच साल पहले मैं ई.एस.आई कॉर्पोरेशन में अपनी पहली नौकरी हासिल करने में सफल रहा और दो साल पहले अपने कुंवारेपन को अलविदा कह दिया। जैसा कि मैंने कहा है, बचपन में मैं अपने पिता के कारण भाग्यशाली था, अब मैं अपने जीवनसाथी के कारण भाग्यशाली हूं क्योंकि उनको भी मेरी तरह विभिन्न स्थानों के बारे में जानने की रुचि है। चूंकि मेरी पत्नी एक डॉक्टर हैं इसलिए उन्हें मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में कार्यशाला में भाग लेने का मौका मिला और फिर हम पहली बार एक साथ मुंबई गए। उक्त शहर की यात्रा से पहले हम दोनों ने अपनी यात्रा, आवास, घूमने के स्थान, भोजनालयों इत्यादि के बारे में जानकारी इकट्ठी कर ली और खरीदारी की भी योजना बनाई।

इंटरनेट एक बार फिर हमारे बहुत काम आया जिससे हमें शहर से परिचित होने में मदद मिली। यह भी एक आश्चर्य की बात है कि कैसे हम आजकल हर चीज के लिए इंटरनेट पर निर्भर रहते हैं। जिस दिन हम ट्रेन से मुंबई शहर पहुंचे वह एक सुहाना दिन था, न तो ठंडी थी और न ही गर्मी। पहली चीज जिसने हमारा ध्यान खींचा वह थी हर जगह ऊँची इमारतें, वहां असीमित गगनचुंबी इमारतें थीं। ये इमारतें हमारे देश की प्रगति को दर्शाती हैं। हम इस कहावत को महसूस कर रहे थे कि मुंबई शहर कभी नहीं सोता है क्योंकि 24 घण्टे हम लोगों को अपने कार्यों में व्यस्त देख रहे थे।

होटल पहुंच, हमने अच्छे से नाश्ता किया और टाटा मेमोरियल अस्पताल की ओर प्रस्थान किया जो दुनिया के प्रमुख कैंसर केंद्रों में से एक है। 1941 में सर दोराबजी टाटा द्वारा भारतीय लोगों की चिकित्सा के उद्देश्य से स्थापित किया गया यह केंद्र देखने लायक है। चिकित्सा सेवा प्रदान करने के अलावा, इसमें शिक्षा और अनुसंधान विभाग भी है। हमने केंद्र के महत्व को समझने, उपचार प्राप्त कर रहे रोगियों के अनुभव को जानने तथा भारत में कैंसर के इलाज के लिए कुछ उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अस्पताल और अनुसंधान इकाई में लगभग 02 दिन बिताए थे।

वैसे उस दिन अस्पताल से लौटने के बाद शाम का भोजन करके हम लोग कोलाबा रोड पर टहलने के लिए निकले। मुंबई शहर का कोलाबा क्षेत्र बहुत ही सुंदर एवं खरीदारी करने के लिए उपयुक्त जगह है। वहां की सड़कों पर चलते हुए ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी घर के साफ सुथरे आंगन में चल रहे हों। जगह–जगह विभिन्न तरह के सामान एवं दुकानों पर भीड़ भरी पड़ी थी। हम लोगों ने अपने लिए कुछ खरीददारी की और होटल आकर तीसरे दिन की यात्रा का कार्यक्रम बनाना शुरु किया। हमने मुंबई घूमने के लिए कुल 03 दिनों की योजना बनाई थी इसलिए एक दिन में शहर के अधिकांश हिस्सों को कवर करने के लिए, इसके लिए, प्रसिद्ध "मुंबई दर्शन" व्यवस्था का विकल्प चुना।

यह एक दिवसीय शहर भ्रमण है जो मुंबई के लगभाग 30 पर्यटन केन्द्रों को कवर करता है। "मुंबई दर्शन" यात्रा, वातानुकूलित बस मे होती है और उसमें एक मार्गदर्शक भी मौजुद होता है। यह मुंबई शहर से परिचित होने का एक शानदार तरीका है। इस दर्शन के दौरान हमें गेटवे ऑफ इंडिया, मरीन ड्राइव, हैंगिंग गार्डन, छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, मालाबार हिल्स, जुहू बीच, बॉलीवुड सितारों के घर, सचिवालय, जहांगीर आर्ट गैलरी, नेहरू विज्ञान संग्रहालय, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया आदि देखने का मौका मिला। मेरे लिए बस द्वारा किया गया यह मुबई दर्शन सार्थक और संतोषजनक था। अगले दिन सुबह हमें मुंबई से वापस आना था तो तैयार होकर हम रेलवे स्टेशन की तरफ रवाना हो गए। ट्रेन पकड़ अगले दिन सुबह हम अपने घर पहुँच गए। हमारा मुंबई का सफर बहुत ही शानदार रहा था। सच में यात्रा से मन चंगा और प्रसन्न होता है। एक तरह की स्फूर्ति एवं सकारात्मक ऊर्जा से मन भर जाता है। ■

मेरी द्वारका यात्रा

श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी
सहायक

सबको मेरा प्रणाम, मेरा नाम वेंकट रंगा राव मामिड़ी है। मैं क्षेत्रीय कार्यालय, कराबी निगम, विजयवाड़ा में सहायक के रुप में कार्यरत हूं। पहले यह उप क्षेत्रीय कार्यालय था, तेलंगाना के अलग होने पर क्षेत्रीय कार्यालय, आंध्र प्रदेश हो गया। जब यह उप क्षेत्रीय कार्यालय था तब "विजयदीप" नामक गृह पत्रिका का प्रकाशन होता था पर अलग होने के बाद प्रकाशन का सुअवसर अब आया है। कुछ दिन पहले मैं परिवार के साथ गुजरात गया था और भ्रमण का रोमांच अब–तक महसूस करता हूं तो पत्रिका प्रकाशन की बात पता चलते ही मैंने अपना अनुभव आपके साथ साझा करने की बात सोची और कागज–कलम लेकर बैठ गया ।

फरवरी 2023 में मैने गुजरात भ्रमण की योजना बनाई। यह राज्य देश के पश्चिमी भाग में अरेबियन सागर के तट पर स्थित है। विजयवाड़ा से इसकी दूरी करीब 1880 किलोमीटर है। ट्रेन से यहाँ पहुँचने में 34 घंटे लगते हैं। गुजरात में सबसे पहले हमने कृष्ण की लीला नगरी द्वारका भ्रमण की योजना बनाई। द्वारका 12000 वर्ष पुराना प्राचीन भारतीय शहर है। यहाँ द्वारकाधीश का पवित्र मंदिर है। यह मंदिर हिंदुओं के पवित्र चार धामों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि मंदिर की संरचना का निर्माण भगवान श्री कृष्ण के निवास स्थान, जिसे हरि–गृह कहा जाता है, के ऊपर 2500 साल पहले श्री कृष्ण के परपोते श्री वज्रभनाथ द्वारा किया गया था। पांच मंजिला यह मंदिर 60 खंभों पर खड़ा है। तीर्थयात्री स्वर्गद्वार (स्वर्ग का प्रवेश द्वार) से मंदिर में प्रवेश करते हैं और मोक्ष द्वार (मोक्ष प्राप्ति का द्वार) से निकलते हैं। मंदिर पर बहुत सुंदर नक्कासी की गई है। इस मंदिर के शिखर पर 52 गज का एक झंडा लगा है। तो इन्हीं द्वारकीधीश के दर्शन की अभिलाषा लिए निकल पड़े हम द्वारका की ओर ।

हमारे ट्रेन के द्वारका स्टेशन पर रुकने पर जैसे ही हमने अपने पैर उस पवित्र भूमि पर रखा रोमांच से शरीर झनझना उठा, रोंगटे खड़े हो गए यह सोचकर की कभी इस भूमि पर कृष्ण अपनी मनमोहनी लीलाएं किया करते थे ईश्वर की उपस्थिति के अद्भुत आभास से मन विभोर हो उठा। वहाँ से होटल पहुँच, सबसे पहले नहा धोकर हम द्वारकाधीश के मंदिर ही पहुँचे। अगर द्वारका भूमि स्पर्श से मन विभोर था तो मंदिर में हमारी मनोदशा का वर्णन करना शब्दों में तो संभव ही नहीं है। हम सभी बहुत देर तक मंदिर की सात्विकता को महसूस करते हुए आनंद से आह्लादित मंदिर दर्शन करते रहे। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सुदामा की तरह एक आम इंसान के रुप में मैं द्वारकाधीश यानि महाप्रभू श्री कृष्ण के दर्शन के लिए उनके दरबार में पहूंचा होऊं ।

फिर हमने वहां के सभी तीर्थ स्थानों जैसे सारदा पीठ, गायत्री पीठ, भड़केश्वर महादेव मंदिर, बेट द्वारका, रुक्मिणी माता मंदिर, गोपी तालाब, नागेश्वर ज्योतिर्लिंगम आदि का भी भ्रमण किया। सभी एक से बढ़कर एक खूबसूरत एवं मनभावन थे।

बेट द्वारका एक द्वीप है जहां श्रीकृष्ण अपनी आठ पत्नियों के साथ रहते थे। यहां ओखा नामक स्थान से नाव से जा सकते हैं। वहां से यह तीन किलोमीटर दूर है। यह वही स्थान है जहां सुदामा भगवान श्रीकृष्ण से मिलने आए थे। माना जाता है कि पूरे शासन काल के दौरान यह उनका (श्रीकृष्ण का) वास्तविक निवास स्थान था।

हमने गोमती नदी पर बना सुदामा सेतु भी देखा। पुल के उपर से सूर्योदय, नदी का सागर–मिलन एवं द्वारका दर्शन अपने आप में अकल्पनीय एवं अद्भुत था। समुद्र में अठखेलियां करना बच्चों को बहुत पसंद होता है। उनकी इच्छानुसार हम अरब सागर के किनारे भी गए जहां बच्चों के मंनोरंजन के लिए विभिन्न तरह की चीजें थी जैसे ऊंट की सवारी, समुद्र में मोटर वाहन की सवारी इत्यादि, हमने सबका आनंद लिया। समुद्री रेत से बच्चों के साथ खेलते वक्त हम भी बच्चे बन गए थे ।

सभी दर्शनीय स्थलों के दर्शन करते–करते वापसी का समय भी आ गया। पर यह अविस्मरणीय अनुभव था। इसको साझा करते हुए मैं और भी एक बात कहना चाहता हूं कि भ्रमण के दौरान मैं भाषागत परेशानियों से सिर्फ हिंदी की वजह ही से बच सका तो मुझे लगता है कि थोड़ी हिंदी सभी को सीख ही लेनी चाहिए। इसी के साथ मैं अपना लेख समाप्त करता हूं।

जय द्वारकाधीश ! ■

हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असंभव है। – गिरधर शर्मा

जागृति

श्रीमती बी. अर्चना, सहायक

जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा वो भारत देश है मेरा..............

ऐसे समृद्ध देश में पैदा होकर हमारा जन्म धन्य हुआ। यहाँ की नदियाँ, पर्वत, समन्दर, खास–ए–हिमालय, वन–उपवन, पशु–पक्षी सब के सब अनोखे और निराले हैं। यहाँ के वृक्षों से चलने वाली हवा सर्वरोग निवारक है। पर्वतों से निकलने वाली नदियों का पानी अमृत जैसा जीवनदायक है। यहाँ प्राकृतिक सम्पदा भरपूर है जो पीढ़ियों से हमारा भरण–पोषण कर रही है। और इन सभी के जरिये जगत में हमारे देश का अपना एक स्थान है।

भारतमाता ! तेरी जय हो !

लेकिन मेरे भाइयों और बहनों! एक बार सब लोग अपने मन में झाँककर देखिए और विचार कीजिये। क्या हम इस प्राकृतिक संपदा का दोहन नहीं कर रहे ?

पेड़ पौधों से परिपूर्ण छोटे या बड़े कच्चे मकानों में रहनेवाले लोग अब बड़े–बड़े इमारतों में रहने की आकांक्षा में ईंट, चुना, लोहा, कंकड़ इत्यादि पदार्थों से पक्के मकान बना रहे हैं। इनकी गरमी को सहने के लिए ए.सी. लगवा हवा को प्रदूषित कर रहे हैं। भीतरी अलंकरण व फर्नीचर के लिए लकड़ी का उपयोग कर रहे हैं जिसके लिए वृक्षों को काटना पड़ता है।

प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने वाले वनों को नष्ट करना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान है। कुछ लोग अपने शौक के लिए शिकार करते हैं और पशु–पक्षी आदि को भी मार देते हैं। वृक्ष एवं पशु–पक्षी प्राकृतिक संतुलन को बनाएं रखने में सहायक होते है। अतः इनकी रक्षा हमारा परम धर्म है।

हर एक व्यक्ति अगर एक वृक्ष लगाए तो करोड़ों वृक्ष हो जाएंगे। वृक्षों से राहगीरों को छाया प्राप्त होती है। पर्यावरण की स्वच्छता एवं मनुष्यों के लिए प्राणवायु वृक्षों की देन है। खाने के लिए फल, अनेक तरह की औषधि, आहार, तेल लकड़ी इत्यादि भी वृक्षों से प्राप्त होता है। वृक्ष वर्षा का कारण भी बनते हैं। बाढ़ एवं तुफान इत्यादि से होने वाले नुकसान से धरती को संरक्षित करते हैं। ये जीव–जंतुओं और पक्षियों को आश्रय भी देते हैं।

हमारे लिए वृक्ष से बड़ा कोई देवता नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गोकुल में सभी गो–पालकों से गोवर्धनगिरि की पूजा करवाई थी इंद्रदेवता की नहीं। क्योंकि ईश्वर पूजा से बढ़कर है प्रकृति पूजा।

इसी पौराणिक घटना से प्रेरित होकर और वनों की रक्षा के लिए समस्त मानव जाति ने वृक्षों की पूजा आरम्भ की। इसी को हम वन–महोत्सव कहते हैं। वन–महोत्सव के लिए अलग–अलग प्रांतों के लोग नजदीकी वन में इकट्ठा होते हैं। वे तरह–तरह के पौधे, पूजा सामग्री, मिष्ठान, पकवान अपने साथ लाते हैं। वृक्षारोपण के उपरांत पौधों की पूजा करके उनको पानी देते हैं। इस दौरान तरह–तरह के कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। लोग वृक्षारोपण के साथ–साथ इनका भी भरपूर आनंद उठाते हैं। कार्यक्रम के उपरांत वो साथ लाए पकवानों को स्वयं भी खाते हैं और पशु पक्षियों को भी खिलाते हैं। इस तरह वृक्षों से ही नहीं बल्कि वन्यप्राणियों से भी एक लगाव का अनुभव करते हैं। वन महोत्सव लोगों मे अपनापन और परस्पर सद्भाव की भावना की वृद्धि भी करता है।

इस संबंध में मैं और एक बात कहना चाहती हूं कि आजकल प्लास्टिक का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है। हम इसका उपयोग करके कहीं भी फेंक देते हैं। चुंकि ये विघटित नहीं होते हैं तो कूड़े के ढेर पर पड़े रहते हैं और बारिश होने पर सब पानी में बहते हुए नालियों तक जाते है तथा उन्हें बंद कर देते है जिससे वर्षा का पानी निकलता नहीं है और सड़कों पर जल जमाव की समस्या पैदा हो जाती है। इसके अलावा ये मिट्टी में पड़े–पड़े उसको भी प्रदूषित करते हैं जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति खत्म होने लगती है। पेड़ों को भी नुकसान पहुंचता है। समुद्री जीवन भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। आंकड़ों के मुताबिक एक साल में करीब 200 कछुएं इस प्लास्टिक से प्रदूषित पानी से मर जाते हैं पर हम मनुष्य अपनी आदत से मजबूर है परिणाम जहाँ देखो वहाँ प्लास्टिक प्लास्टिक प्लास्टिक!

इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि कृपाकर प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल बंद कर दें। मिट्टी के पात्र, जूट की थैलियों, केले या किसी और पत्ते से बने थालियों आदि का उपयोग करें ताकि इस समस्या से निजात मिल सके और पृथ्वी हरी–भरी रह सके।

भाइयों और बहनों! हम सब मिलकर हमारी धरती को वृक्षों से परिपूर्ण कर दें और चुस्त – तंदुरुस्त जीवन बिताएं। धन्यवाद ! ■

अपनी सरलता के कारण हिंदी स्वयं ही राष्ट्रभाषा हो गई है। – भवानीदयाल संन्यासी

मैं और मेरी कमाई

श्रीमती बी. अर्चना, सहायक

मैं और मेरी कमाई,
अक्सर ये बातें करते हैं,
टैक्स न लगता तो कैसा होता?
तुम न यहाँ से कटती,
न तुम वहाँ से कटती,
मैं उस बात पे हैरान होता,
टैक्स न लगता तो ऐसा होता,
टैक्स न लगता तो वैसा होता,
मैं और मेरी कमाई,
"अक्सर" ये बातें करते हैं......
ये टैक्स है या मेरी तिजोरी खुली हुई है?
या आईटी की नजरों से मेरी जेब ढीली हुई है,
ये टैक्स है या सरकारी टेंशन !
कमाई का धोखा है या मेरे पैसों की खुशबू,
ये इनकम की है सरसराहट कि टैक्स चुपके
से यूँ कटा,
ये देखती हूँ मैं कब से गुमसुम,
जबकि मुझको भी ये खबर है,
तुम कटते हो, जरूर कटते हो,
मगर ये लालच है कि कह रहा है,
कि तुम नहीं कटोगे, कभी नहीं कटोगे......
मजबूर ये हालात इधर भी है, उधर भी,
टैक्स बचाया, कमाई इधर भी है, उधर भी,
दिखाने को बहुत कुछ है मगर क्यों दिखाएँ हम,
कब तक यूंही टैक्स कटवाएँ और सहें हम,
दिल कहता है आईटी की हर रस्म उठा दें,
क्यों टैक्स में सुलगते रहे, आईटी को बता दें,
हाँ, हम टैक्स पेयर हैं
हाँ, हम टैक्स पेयर हैं
अब यही बात पेपर में इधर भी है, और उधर भी है।

दक्षिण का कैलाश
श्री शैलम मल्लिकार्जुन स्वामी

श्री एस. सी. गुप्ता,
उप निदेशक (सेवा निवृत्त)

सनातन धर्म में त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं। सृष्टि रचना ब्रह्मा जी ने की है, इसका पालन पोषण विष्णु करते हैं और शिव का काम संहार करना है। शिव का नाम रुद्र भी है जो बहुत प्रचलित है। इसके अलावा इन्हें भव, शर्व, पशुपति, उग्र, महादेव और ईशान भी कहा जाता है। अथर्ववेद में नीलमस्योदर लोहितम पृष्टम भी कहा गया है। श्रावण का महीना शिवजी को समर्पित है। शिव शब्द का अर्थ है पाप नष्ट करने वाला–श्याति पापम। हिंदुस्तान अपनी आध्यात्मिकता के लिए विश्वगुरु माना जाता है। इस आध्यात्मिकता के संदर्भ में ऐसा माना जाता है कि ऐसा कोई शहर या गाँव नहीं जहाँ शिव का कोई मंदिर और शिवालय न हो। शिव का शाब्दिक अर्थ है–मंगल और कल्याण करने वाला तत्त्व। भगवान शिव के चार धाम और बारह ज्योतिर्लिंग हैं, हर धाम के साथ एक ज्योतिर्लिंग जुड़ा हुआ है। उत्तर का धाम बद्री विशाल या बद्रीनाथ, इसका ज्योतिर्लिंग केदारनाथ। दक्षिण का धाम रामेश्वरम या रामेश्वर इस तरह रामेश्वर या रामेश्वरम का ज्योतिर्लिंग है रामेश्वरम। पश्चिम का धाम द्वारका है, उसका ज्योतिर्लिंग है सोमनाथ। पूर्व का धाम जगन्नाथ पूरी और इसका ज्योतिर्लिंग है–वैद्यनाथ। इसके अतिरिक्त आठ ज्योतिर्लिंग इस प्रकार है–उज्जैन का महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, त्रयंबकेश्वर, भीमाशंकर नागेश्वरम, काशी का विश्वनाथ और आन्ध्र प्रदेश का शैलम मल्लिकार्जुन स्वामी। इन बारह ज्योतिर्लिंगों के स्मरण मात्र से सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

आन्ध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर शैल पर्वत स्थित श्री मल्लिकार्जुन बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इसे दक्षिण का कैलाश भी कहते हैं। श्री शैलम ज्योतिर्लिंग आन्ध्र प्रदेश के पश्चिमी भाग के कुर्नूल जिले की नल्लामल्ला पहाड़ी पर जंगलों के मध्य स्थित है। यहाँ शिवजी का नाम अर्जुन और पार्वती का नाम मल्लिका है, इसलिए यह मल्लिकार्जुन नाम से प्रसिद्ध हुआ, यह दक्षिण शैली में बना एक मंदिर है। इस क्षेत्र को दिव्य क्षेत्र माना जाता है। श्री शैलम मंदिर का इतिहास सातवाहन काल से मिलता है। पहली शताब्दी के पुल्लुमवी के नासिक अभिलेख में पहली बार श्री शैलम पहाड़ी के बारे में कोई साक्ष्य मिलता है। पल्लव, चालुक्य, ककातीय और रेड्डी राजाओं द्वारा श्री शैलम की पूजा–अर्चना का संदर्भ मिलता है। ककातीय राजा प्रतापरुद्र ने श्री शैलम क्षेत्र के विकास के लिए अनेक कार्य किए। रेड्डी राजाओं के काल में श्री शैलम मन्दिर के उत्थान के लिए सबसे ज्यादा कार्य कराए जाने की जानकारी मिलती है। चौदहवीं सदी के प्रलयवम रेड्डी ने पातालगंगा से श्री शैलम के लिए सीढ़ीदार मार्ग बनवाया। आजकल इस मार्ग पर पक्की सड़क है। विजयनगर के हरिहर ने मन्दिर के मुख्य मंडपम का निर्माण करवाया, साथ ही उन्होने दक्षिण गोपुरम का निर्माण कराया। पंद्रहवी सदी में कृष्णदेवराय ने राज गोपुरम का निर्माण कराया। इस मन्दिर का उत्तरी गोपुरम सन 1667 में छत्रपति शिवाजी ने बनवाया था। स्कंदपुराण में श्री शैल काण्ड के नाम का अध्याय है जिसमें मन्दिर का वर्णन आता है। तमिल संतों ने भी प्राचीन काल से ही मल्लिकार्जुन स्वामी की स्तुति की। ऐसा कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने मन्दिर की यात्रा के उपरांत "शिवनंद लहरी" की रचना की थी। श्री शैलम का संदर्भ पुराणों व महाभारत में भी आता है। यहाँ शैल पर्वत पर वृक्ष नहीं हैं, एक ऊँची पत्थर की चारदीवारी है, जिस पर हाथी, घोड़े आदि बने हैं। द्वार पर गोपुर है, मन्दिर के बाहर पीपल–पाकड़ के सम्मिलित वृक्ष हैं। मन्दिर के चारों ओर बावड़ियाँ और दो छोटे–छोटे सरोवर हैं। शिवरात्रि के दिन यहाँ शिव पार्वती विवाहोत्सव होता है। पाताल गंगा मन्दिर के पूर्व द्वार से निकलती है तथा कृष्णा नदी मे जाकर विलीन हो जाती है। इसके दर्शन मात्र से संपूर्ण मनोकामना पूर्ण होती है।

दर्शन का समयः सुबह साढ़े चार बजे मंदिर खुलता है, पाँच बजे से आम लोगों के लिए दर्शन शुरू होता है। आखिरी दर्शन रात दस बजे तक किया जा सकता है। यहाँ शिव का निःशुल्क दर्शन सुबह छः बजे से दोपहर साढ़े तीन बजे तक और फिर शाम छः बजे से रात्रि दस बजे तक किया जा सकता है। मन्दिर में तिरुपति की तरह ही अन्नदानम का संचालन किया जाता है। श्रद्धालु दर्शन करके मन्दिर से बाहर निकलते हैं तो उन्हे भोजन का कूपन निःशुल्क दिया जाता है।

यात्रा कैसे पूरा करें– हैदराबाद से श्री शैलम करीब 220 किलोमीटर की दूरी पर है। हैदराबाद देश के विभिन्न हिस्सों से रेल, सड़क और हवाई मार्ग से जुड़ा है। वहाँ से श्री शैलम के लिए नियमित बस सेवा है, उसका उपयोग कर सकते हैं। कुर्नुल भी रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है वहाँ से भी बस द्वारा जा सकते हैं, श्री शैलम की ओर हर रास्ता घने जंगलों से होकर जाता है। मान्यता है कि मल्लिकार्जुन स्वामी के दर्शन के बाद साक्षी गणपति का दर्शन अवश्य करना चाहिए। इसके बिना मल्लिकार्जुन स्वामी का आशीर्वाद नहीं मिलता। साक्षी गणपति का मन्दिर श्री शैलम मुख्य मन्दिर से दो किलोमीटर पहले शहर के प्रवेश द्वार पर ही है। ■

हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है। – शंकरराव कप्पीकेरी

विजयवाड़ा गीत

श्री सरोज कु यादव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
ईएसआई अस्पताल, आदित्यपुर, झारखंड

"यत्र सुवर्णा माता मैरी, यत्र कनक दुर्गा माता,,
तत्र तथागत, कृष्णा तत्रे अमरावती–विजयवाड़ा।"
तत्र श्री कृष्णा तट तक विस्तृत, अमरावती–विजयवाड़ा।
पतित–पावनी कृष्णा तत्रे, कराबी निगम–विजयवाड़ा
गोदावरी की गोद मे भी, अपना निगम–विजयवाड़ा"
कनकदुर्गाभिषेक करें कृष्णा के पावन जल से,
पंचदीप की आरती निगम के "दीप–विजय" से !

राजभाषा कविता
(अष्टम अनुसूची पर आठ पंक्तियाँ)

भाषाई दीवार न होता .....भारत का दीदार न होता,
कहाँ होती तब अनेकता और संविधानी एकता,
तेलुगे कहाँ प्राचीनम तब तामिले कहाँ अति प्राचीनम,
कन्नड़, मलयालम की सरगम, कोकिला माँ मम संस्कृतम्
'पंज–बंग' गौरव गुजराती, उर्द, उडीया, कोंकणी, मराठी,
आसामी–कश्मीरी, बोड़ो, नपी नेपाली, संथाली,
सिन्धी, डोगरी मणि मणिपुरी, मैथिल मेरी मनमोहिता,
आकर्षक मनमोहक रंग में सबकी "हिन्दी" नवागता।

दोष नहीं, अच्छाइयां खोजें

सुश्री पद्मा प्रिया,
उप निदेशक,
ईएसआई मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, सनतनगर, हैदराबाद

करीब दो दशक पहले की बात है। किसी गांव में एक किसान रहता था उसको पीने का पानी कुछ दूर से भरकर लाना पड़ता था। उसके पास दो बाल्टियां थीं जिन्हें वह एक डंडे के दोनों सिरों पर बांधकर उनमें तालाब से पानी भरकर लाता था।

उन दोनों बाल्टियों में से एक के तले में एक छोटा सा छेद था जबकि दूसरी बाल्टी बहुत अच्छी हालत में थी। तालाब से घर तक के रास्ते में छेद वाली बाल्टी से पानी रिसता रहता था और घर पहुँचते–पहुँचते उसमें आधा पानी ही बचता था। बहुत लंबे अरसे तक ऐसा रोज होता रहा और किसान सिर्फ डेढ़ बाल्टी पानी लेकर ही घर आता रहा। अच्छी बाल्टी को रोज–रोज यह देख खुद पर घमंड हो गया।

छेद वाली बाल्टी अपने जीवन से पूरी तरह निराश हो चुकी थी। एक दिन रास्ते में उसने किसान से कहा–'मैं अच्छी बाल्टी नहीं हूँ। मेरे तले में छेद है'। किसान ने छेद वाली बाल्टी से कहा–'क्या तुमने देखा है कि पगडण्डी के जिस ओर तुम चलती हो उस ओर हरियाली है और फूल खिलते हैं लेकिन दूसरी ओर नहीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे हमेशा से इसका पता था और मैं तुम्हारे तरफ की पगडंडी पर फूलों के बीज छिड़कता रहता था जिन्हें तुमसे रिसने वाले पानी से सिंचाई लायक नमी मिल जाती थी। यदि तुममें वह बात नहीं होती, जिसे तुम अपना दोष समझती हो तो इन पगडंडियों पर इतनी सुन्दरता नहीं होती।'

सीखः कभी–कभी ऐसे दोषों और कमियों से भी हमारे जीवन को सुंदरता और पारितोषिक देने वाले अवसर मिलते हैं। दूसरों में दोष ढूंढने की बजाय अच्छाइयां खोजें। ■

मेरी भावना

श्री वेणु माधव
सहायक निदेशक

एक मुलाकात
दो प्याली चाय
हम और तुम
और.....बातें बेहिसाब
कहिए ....
मंजूर है जनाब ....

जिंदगी में जो हम चाहते हैं।
वो आसानी से नहीं मिलता
लेकिन जिंदगी का सच ये है कि,
हम भी वही चाहते हैं
जो आसान नहीं होता ...... ।

कामयाब होने के लिए
अकेले ही आगे बढ़ना पड़ता है,
लोग तो पीछे तब आते हैं
जब हम कामयाब होने लगते हैं....

संघर्ष में आदमी अकेला होता है
सफलता में दुनिया उसके साथ होती है
जिस जिस पर ये जग हँसा है,
उसी ने इतिहास रचा है......

हर किसी को खुश करना
इंसान के बस की बात नहीं,
इसलिए सिर्फ कोशिश करें
अपने आप को खुश रखने की......

मैंने जब भी जाने कि
इजाजत माँगी......
उन्होंने जुबां से हाँ कह के
निगाहों से रोक लिया !!

महेंद्र सिंह धोनी–विश्व प्रसिद्धि से पूर्व से परिचित

श्री ए. वी. रामकृष्ण
शाखा प्रबन्धक,एलुरू शा.का.

शीर्षक" से लगता है कि "माही" की प्रसिद्धि से पहले से ही मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित हूँ लेकिन ये बात नहीं है। मैं उन लाखों लोगो में से एक हूँ जिन्होंने उन्हें टीम इंडिया (भारतीय राष्ट्रीय क्रिकेट दल) में आने से पहले भी क्रिकेट खेलते हुए देखा था।

अतिशय खेल–प्रेमी होने के कारण उन दिनों मैं सभी खेलों मे दिलचस्पी रखता था तथा जिनमें भारत की सहभागिता होती उनको देखता था। सन् 2003 में, छुट्टियों के दौरान जब मैं खेल चैनलों को ढूँढ़ने के लिए अपनी अंगुलियों को रिमोट के बटन पर दौड़ा रहा था, उस वक्त मेरा ध्यान एक क्रिकेट मैच पर अटक गया जो भारत–ए टीम तथा पाकिस्तान–ए टीम के बीच चल रहा था। यह तीन देशों के सीरीज का अंतिम मुकाबला था जिसमें तीसरा देश कीनिया था। किसी भी मैच के मुकाबले भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे मैच की गंभीरता और रोमांचकता जगजाहिर है। गौतम गंभीर, शिखर धवन, दिनेश कार्तिक जैसे प्रसिद्ध दिग्गज खिलाड़ी इस टीम के सदस्य थे।

जब मैंने मैच देखना शुरू किया तो पाकिस्तान की पारी समाप्त हो चुकी थी और उनका कुल स्कोर 220 से अधिक था। भारतीय पारी के दौरान मध्यक्रम में लंबे बालों वाला एक खिलाड़ी बैटिंग करने आया और अपनी धुआँधार बैटिंग से पाकिस्तानी गेंदबाजों की धज्जियाँ उड़ा दी। उस दिन उसने अपने अर्ध–शतकीय पारी में पाँच छक्के जड़े जो तेज गेंदबाजों के बॉल पर जड़े गए थे। उस दिन भारत–ए टीम की जीत में उस खिलाड़ी ने अहम भूमिका निभाई थी और उस खिलाड़ी का नाम था "महेंद्र सिंह धोनी"। उस मैच में मैं पाकिस्तानी टीम की बैटिंग नहीं देख पाया था, अतः मुझे पता नहीं था कि धोनी विकेट–कीपर हैं। परंतु जब उन्हें विकेट–कीपिंग और बैटिंग के लिए उस मैच का "मैन ऑफ द मैच" घोषित किया गया तो मुझे बहुत खुशी हुई थी क्योंकि भारत एक अच्छे विकेट–कीपर सह बल्लेबाज तथा एक ऑलराउंडर की तलाश मे था वास्तव मे भारतीय दल कपिल देव के जोड़ का ऑल राउंडर अभी तक नहीं ढूँढ पाया था।

लगभग सभी टेस्ट टीमों के पास उस समय एक से एक उत्तम बल्लेबाज विकेट–कीपर के तौर पर थे (जैसे–आस्ट्रेलिया के लिए एडम गिलकृष्ट, इंग्लैण्ड के पास एलेक स्टीवर्ट, श्रीलंका के पास संगकारा, दक्षिण अफ्रीका के पास मार्क बाउचर आदि)। लेकिन भारतीय विकेट–कीपर हमेशा पुंछल्ले बल्लेबाज की भूमिका निभाते थे। (चाहे वो सैय्यद किरमानी, विश्वनाथ, मोरे या दीघे, विजय यादव, सबा करीम, दहिया, अजय रात्रा, नयन मोंगिया क्यों न हों) वे अपने बल पर बैटिंग करके मैच जीताने का माद्दा तो नहीं ही रखते थे। इस मायने में भारत दूसरे देशों से पिछड़ रहा था, तब राहुल द्रविड़ को यह सोच कर विकेट–कीपिंग की जिम्मेदारी दी गई कि विकेट–कीपर भारतीय टीम पर भार न बन पाये चूँकि कोई भी विकेट–कीपर बल्लेबाजी नहीं कर पाता था। हम सभी जानते हैं कि द्रविड़ विकेट–कीपर के तौर पर अपने कैरियर में हमेशा संघर्ष करते दिखे।

इन परिस्थितियों में मुझे खुशी इस बात की हुई कि अंततः एक भारतीय विकेट–कीपर तेज गेंदबाजों के विरुद्ध छक्के पर छक्का उड़ा रहा है। मेरी खुशी का ठिकाना तब नहीं रहा जब उन्होंने वही कारनामा

फाइनल मैच (उन्हीं टीमों के बीच) में फिर से दोहराया और उस मैच में भी "मैन ऑफ द मैच" का खिताब अपने नाम कर लिया। उस समय मैंने अपने दोस्तों से कहा था कि यह खिलाड़ी जिसका नाम "एम. एस. धोनी" है जल्दी ही भारतीय सीनियर टीम में शामिल होगा और भारतीय क्रिकेट टीम पर बहुत दिनों तक राज करेगा।

मेरा यह कथन सत्य हुआ...........उन्हें बांग्लादेश जानेवाली भारतीय टीम के लिए चुन लिया गया। हालांकि वह उस सीरीज में अच्छा नहीं कर सके थे, लेकिन फिर भी भारतीय चयनकर्ताओं ने उन्हें पाकिस्तान जानेवाली टीम के लिए चुनकर एक और मौका दिया। इस बार भी पहले मैच में उन्हें बैटिंग करने का मौका नहीं मिला। दूसरे मैच में उन्हें नम्बर–3 पर (पहला विकेट गिरने के बाद) बैटिंग के लिए भेजा गया, बावजूद पिछले पाँच पारियों में उनके साधारण प्रदर्शन के जिसमें रन आउट, निचले क्रम पर बैटिंग, बैटिंग का मौका नहीं मिलना आदि शामिल है।

उस समय के कप्तान सौरभ गांगुली, जिन्हें प्रतिभा के परखने का उत्कृष्ट ज्ञान था तथा जो उनके (धोनी के) गेंद की धुनाई की प्रतिभा से परिचित थे, ने उन्हें शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी के लिए भेजा। वास्तव में धोनी के लिए यह अपना हुनर दिखाने का पहला मौका था। जब वह शीर्ष क्रम में बैटिंग करने जा रहे थे, कमेंटेटर संजय मांजरेकर ने इसे कप्तान का अच्छा निर्णय बताकर इसकी प्रशंसा की तथा अपनी खुशी और उत्साह जाहिर किया क्योंकि उन्हें भी उनकी गेंद के धुनाई की क्षमता की जानकारी थी। लेकिन दर्शकों की भौहें तनी हुई थी क्योंकि उन्हें उनकी प्रतिभा का अंदाजा भी नहीं था। उस क्षण धोनी की सफलता भारत से ज्यादा उनके खुद के लिए आवश्यक थी। सौभाग्य से इस मौके को उन्होंने अपने हाथ से जाने नहीं दिया तथा 148 रन बनाए जो किसी भी भारतीय विकेट–कीपर द्वारा बनाया सर्वाधिक रन था। एक ऐसा रिकॉर्ड जिसको बाद में उन्होंने ही श्रीलंका के खिलाफ 186 रन बनाकर और सुधारा। उसके बाद यह इतिहास बन गया और वह घर–घर में लोकप्रिय हो गए।

व्यक्तिगत रूप से मैं काफी खुशी महसूस कर रहा था कि मेरी भविष्यवाणी सच साबित हुई और वह अभी भी भारत के लिए खेल रहे हैं। लेकिन मैं यह अनुमान नहीं लगा पाया था कि वे एक अद्भुत कप्तान भी होंगे। उन्होने मेरे इस पूर्वानुमान को भी झुठला दिया था कि वे एक औसत विकेट–कीपर साबित होंगे। समय के साथ वह भारतीय क्रिकेट के महानतम विकेट–कीपर साबित हुए। अचूक स्टंपिंग और कैचिंग को छोड़कर बल्लेबाजों को रन आउट करने का उन्होंने अपना अनोखा अंदाज दिखाया।

वक्त के साथ उन्होंने सैकड़ों उपलब्धियां हासिल कीं। जिन्हें मैं अपने छोटे से लेख में समाहित नहीं कर सकता और शायद समाहित करने की आवश्यकता भी नहीं क्योंकि अब वो किसी परिचय के मोहताज नहीं ।

जय हो माही ■

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है। – (जस्टिस) कृष्ण स्वामी अय्यर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम–अब तक का सफर

श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी
सहायक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अधिनियम, 1948 एक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम हैं जिसका उद्देश्य असंगठित क्षेत्र के पंजीकृत कर्मचारियों को बीमारी, प्रसूति, अपंगता तथा रोजगार चोट के कारण मृत्यु की स्थिति में सामाजिक सूरक्षा प्रदान करना और बीमाकृत कर्मचारियों को सुविधा प्रदान करना है। योजना का प्रबंधन कराबी निगम द्वारा किया जाता है। पंजीकृत कर्मचारियों तथा उनके नियोजकों द्वारा किया गया अंशदान ही कराबी निगम के आय का स्रोत है।

इस योजना का उद्घाटन 24 फरवरी 1952 को तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कानपुर में किया गया था। इस का उद्घाटन कानपूर एव दिल्ली में एक साथ किया गया था। दोनों केन्द्रों में प्रारंभिक कवरेज 120,000 कर्मचारियों का था। हमारे पहले प्रधान मंत्री इस योजना के प्रथम मानक बीमित व्यक्ति थे।

कराबी अधिनियम, 1948, 10 या अधिक कर्मचारियों को रोजगार देने वाले कारखानों और प्रतिष्ठानों पर लागू होता हैं। हालांकि कुछ राज्यों में इसकी सीमा अभी भी 20 है।

जो कर्मचारी प्रति माह रु. 21,000/– का वेतन प्राप्त करते हैं वे इस योजना के अंतर्गत पंजीकरण करवा सकते हैं। विकलांग व्यक्तियों के लिए यह सीमा रु. 25,000/– है।

कराबी अधिनियम, 1948 के तहत 01.01.2023 तक के कवरेज की स्थिति इस प्रकार है:

क्र.सं.	विवरण	ब्यौरा
1	उन जिलों की संख्या जिनमें कराबी योजना अधिसूचित की गयी	668
2	कराबी अधिनियम, 1948 के तहत पूर्णत अधिसूचित जिलों की संख्या	565
3	आंशिक रूप से अधिसूचित जिलों की संख्या	103
4	पंजीकृत नियोजकों की संख्या	20,83,340
5	पंजीकृत कर्मचारियों की संख्या	3,05,42,660
6	व्याप्त बीमित व्यक्तियों की संख्या	3,42,97,410
7	कराबी अधिनियम, 1948 के तहत लाभार्थियों की संख्या	13,30,73,951

कर्मचारी राज्य बीमा निगम आई.एल.वो. की सूची में शामिल अधिकांश आकस्मिक सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करने वाला देश का एक मात्र संगठन हैं।

कराबी अधिनियम, 1948 की धारा 46 निम्नलिखित सामाजिक सुरक्षा हितलाभ प्रदान करती है:

1.	बीमारी हितलाभ	7.	प्रसूति हितलाभ
2.	वर्धित बीमारी हितलाभ	8.	प्रसूति/मातृत्व व्यय
3.	विस्तारित बीमारी हितलाभ	9.	अंत्येष्टि व्यय
4.	अस्थायी अपंगता हितलाभ	10.	बेरोजगार भत्ता (आर.जी.एस.के.वाई. एवं ए.बी.बी.के.वाई.)
5.	स्थायी अपंगता हितलाभ	11.	चिकित्सा हितलाभ
6.	आश्रितजन हितलाभ	12.	निगम कोविड रिलीफ योजना के अन्तर्गत भी आज कल सेवाएं प्रदान कर रहा हैं।

1952 में इस योजना के आरंभ के बाद से, कराबी योजना का आधारभूत संरचना का नेटवर्क बढ़ता रहा जिससे श्रमिक आबादी के लिए सामाजिक सुरक्षा हितलाभों को प्राप्त करना और भी आसान हो गया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने इनपेशेंट सेवाओं के लिए अब तक 160 अस्पताल स्थापित किया है। साथ ही साथ लगभग 1502/353 औषधालय और आयुष इकाियों एवं 1003 पैनल क्लीनिकों का नेटवर्क स्थापित कर के प्राथमिक और बाह्य रोगी सेवाएं प्रदान कर रहा है।

निगम नकद लाभ का भुगतान और प्राथमिक चिकित्सा देख–भाल एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने के लिए औषधालय सह शाखा कार्यालय खोल रहा है।

निगम मुंबई, नई दिल्ली, कोलकाता, चेन्नै, आलवल, बिहटा (पटना) और इंदौर में सात व्यवसायिक केंद्र स्थापित कर के देश भर में व्यवसायिक रोगों के उन्मूलन का प्रयास कर रहा है ।

इस के अलावा कराबी निगम द्वारा 8 मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, 2 डेन्टल कॉलेज, 2 नर्सिंग कॉलेज और एक पारामेडिकल कॉलेज देश भर में चलाए जा रहे हैं । नकद लाभों के भुगतान के लिए देश भर में 607 से अधिक शाखा कार्यालय और उनके कामकाज पर निगरानी रखने के लिए 64 क्षेत्रीय/उपक्षेत्रीय कार्यालय हैं ।

कराबी योजना "उनकी क्षमता के अनुसार अनुदान और उनके अवकाश के अनुसार लाभ" के गांधीवादी सिद्धांत पर आधारित है ।

कराबी योजना ने अपनी स्थापना से अब तक व्याप्ति एवं सेवा प्रदान करने में निरंतर प्रगति की है और पीछे मुड़कर नहीं देखा है । ■

कराबी योजना के अंतगर्त कोविड राहत

करावी निगम देश के संगठित क्षेत्र के कामगारों को नकद और चिकित्सा हितलाभ प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण एवं अग्रणी सामाजिक सुरक्षा संगठन है। इसकी स्थापना कराबी अधिनियम 1948 के द्वारा हुई। जिसका उद्देश्य असंगठित क्षेत्र के पंजीकृत कर्मचारियों को बीमारी, प्रसूति, अपंगता तथा रोजगार चोट के कारण मृत्यु की स्थिति में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है।

वर्ष 2020 में शुरु हुए कोविड महामारी ने पूरी दुनिया के साथ–साथ भारत में भी तबाही मचा रखी थी । पूरा जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था। आतंक का माहौल था। कोविड से मरने वाले की संख्या लाखों में थी। जिनके घर कोविड की कुदृष्टि पड़ती अंधेरा छा जाता। इससे कराबी निगम के बीमाकृत व्यक्ति भी अछूते नहीं थे तो यह जरुरी था कि इसके लिए कोई योजना शुरु की जाए इसलिए हमने "कोविड राहत योजना" का शुभारंभ किया ताकि कोविड पीडितों को भी राहत प्रदान की जा सके ।

इस योजना के कार्यान्वयन में निगम के क्षेत्रीय कार्यालयों एवं शाखा कार्यालयों ने अह्म भूमिका निभाई। बहुत से कोविड पीड़ित बीमाकृत व्यक्तियों को इस योजना के अन्तर्गत राहत प्रदान किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा ने इस योजना के अन्तर्गत कुल 767 मामलों में राहत प्रदान किया। कोविड से हुई मृत्यु के 322 मामलों में भी कार्यालय द्वारा राहत प्रदान किया गया। अब तक इस योजना के अन्तर्गत कुल 3 करोड़ 70 लाख का भुगतान किया गया है। कोविड राहत योजना ने न जाने कितने परिवारों को आजीविका चलाने में मदद दी। इसमें से एक परिवार द्वारा व्यक्त आभार हम आपके साथ साझा कर रहे है:

मेरा नाम बी. सिरीशा है और मैं एक गृहणी हूं। मेरे पति स्वर्गीय बी. जगन्नाथ प्रसाद एनटीटीपीएस में अनुबंधित श्रमिक के रुप में कार्य करते थे। हमारे दो बच्चे हैं। दूर्भाग्यवश वह एक दिन कोविड–19 से पीड़ित हो गए और इस महामारी से दिनांक 22–10–22 को उनकी मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद चारों तरफ अंधेरा दिखाई दे रहा था पर तभी मुझे कराबी निगम द्वारा शुरु किए गए "कोविड राहत योजना" के बारे में पता चला। मैंने शाखा कार्यालय, गांधीनगर से संपर्क किया और सीआरएस दावा प्रपत्र भरकर जमा किया। कुछ दिनों के बाद मुझे कराबी निगम द्वारा दावे के स्वीकृत होने और सीआरएस के तहत आश्रित हितलाभ के रुप में रु. 14700/– के मासिक पेंशन की स्वीकृति के संबंध में एक पत्र प्राप्त हुआ। आज कराबी निगम की वजह से मैं अपने परिवार का भरण–पोषण करने में सक्षम हूं। मैं निगम का दिल से शुक्रिया अदा करती हूं। ■

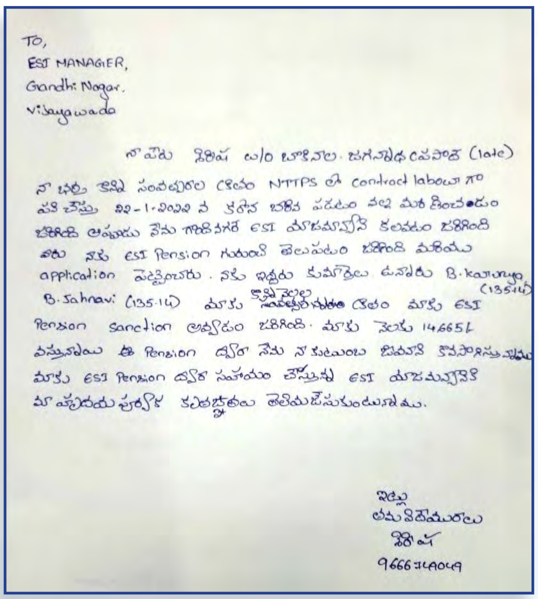

TO,
ESI MANAGER,
Gandhi Nagar,
Vijayawada

[illegible] (late)
[illegible] NTTPS [illegible] contract labour [illegible]
[illegible] 22-1-2022 [illegible]
[illegible] ESI [illegible]
[illegible] ESI Pension [illegible]
application [illegible] B. karunya (135.14)
B. Sahnavi (135.14) [illegible] ESI
Pension sanction [illegible] 14665/-
[illegible] Pension [illegible]
[illegible] ESI Pension [illegible] ESI [illegible]
[illegible]

[illegible]
9666 ... 049

बीमाकृत व्यक्ति के आश्रितों द्वारा दिया गया मूल आभार पत्र तथा
आश्रित हितलाभ मंजूरी संबंधी कागजात लेते हुए उनकी तस्वीर

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा

कराबी निगम की स्थापना असंगठित क्षेत्र के पंजीकृत कार्मिकों को विभिन्न असामयिक स्थितियों में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से हुई थी। जिसमें से एक है आश्रित जन हितलाभ। जब परिवार का कोई कमाऊ व्यक्ति चला जाए तो उस परिवार की स्थिति आप समझ सकते हैं। ऐसे में कराबी निगम द्वारा दिया जाने वाला आश्रित जन हितलाभ उनके लिए जीवनदायी साबित होता है।

हाल के दिनों विशेष कर कोरोना एवं उसके बाद के दिनों में क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा ने बहुत से ऐसे मामलों में आश्रितों को राहत प्रदान किया है जिनमें से कुछ मामले संक्षेप में हम आपके साथ साझा कर रहे हैं:

1. यह मामला श्री पिल्ली रॉव, बीमा संख्या–6208894556 का है जो ओएनजीसी, राजमुंद्री में काम करते थे। उनका एक छोटा सा खुशहाल परिवार था। परन्तु दिनांक 19.05.21 को वो कोरोना की चपेट में आ गए और उनकी मृत्यु हो गई। परिवार ने अपना आर्थिक आधार खो दिया जिससे उनके जीवन में अंधेरा छा गया पर बाद में उन्हें कोविड राहत योजना के अन्तर्गत कराबी निगम द्वारा दिए जाने वाले पेंशन का पता चला और इसके लिए उन्होंने आवेदन दिया। आवेदन की स्वीकृति पर उन्हें कराबी निगम द्वारा 500000/– रु. की बकाया राशि एवं 11500/– रु. प्रति महीने की दर से पेंशन की प्राप्ति हुई। 500000/– रु. की राशि निम्न मध्यमवर्गीय परिवार के लिए बहुत मायने रखती है। पेंशन की राशि तो पूरे जीवन भर उनके आश्रितों के काम आएगी।
2. श्री कालीचारला राजेश का यह बड़ा ही महत्वपूर्ण मामला है। वो एनआरके एगरो इंडस्ट्री में नमूना संग्रह करने वाले एजेंट थे। दिनांक 19.09.23 को अपने कार्य पर निकले राजेश की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। वह अविवाहित थे एवं उनकी मां की भी मृत्यु हो गई थी। सिर्फ परिवार में पिता ही बच गए थे। परिवार के जाने के बाद अगर वृद्ध व्यक्ति के पास रोटी का जुगाड़ भी न हो तो कदाचित वो अपनी इहलीला ही समाप्त कर लें परन्तु रोजगार चोट की वजह से बेटे की मृत्यु होने के कारण कराबी निगम द्वारा आश्रितजन हितलाभ के रुप में उन्हें 4800/– का पेंशन एवं बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु से हितलाभ की मंजूरी तक की अवधि के लिए बकाया राशि प्राप्त हुई। जो निश्चित रुप से उनके लिए जीवनदायी साबित हुई।
3. तीसरा मामला भी एक कोविड मामला है, काकीनाडा में एक निजी

द्वारा प्रदत्त आश्रितजन हितलाभ

संगठन में मजदूर के रूप में काम कर रहे स्वर्गीय पी. विजया कुमार, बीमा संख्या–6207391699 को दिनांक 31.08.2020 को कोविड पॉजीटिव पाया गया। दूर्भाग्य से उसी दिन उनकी मृत्यु हो गई। अगस्त, 2023 में कोविड राहत योजना के अन्तर्गत कराबी निगम द्वारा दिए जाने वाले पेंशन का पता चला और इसके लिए उन्होंने आवेदन दिया। आवेदन की स्वीकृति के बाद उन्हें 5,65,000/–रुपये एकमुश्त प्राप्त हुए और अब उन्हें औसतन 13,500/–रुपये प्रति माह मिल रहे हैं। चूंकि उन्हें दो बेटियां थी तो उनकी पत्नी ने कहा कि एकमुश्त राशि से बेटियों की शादी में आसानी होगी। पेंशन मिलने से रोजमर्रा की जरुरतें पूरी हो जाएगी। अब अकेले भी वो सभी एक सम्मानजनक जीवन जी सकेंगी ।

4. श्री पी. सीता रामबाबू बीमा संख्या– 6207963853 तहसीलदार (एमआरवो) कार्यालय में एक डाटा एंट्री ऑपरेटर के रूप में कार्यरत थे जो पहले भी बीमारी की हालत में कराबी निगम की मदद ले चुके थे परन्तु दिनांक 12.09.23 को अचानक वो गिरे और फिर न उठ पाएं। पता चला कार्डियक अरेस्ट की वजह से उनकी मृत्यु हो गई चूंकि उस वक्त वो कार्यस्थल पर थे तो कराबी निगम द्वारा उनके मामलें को रोजगार चोट के अन्तर्गत आश्रित जन हितलाभ की मंजूरी प्राप्त हुई। जिसमें उन्हें कुछ बकाया राशि और रु.16,500/– प्रति माह पेंशन की प्राप्ति हुई। निःसंदेह यह उनके आश्रितों के लिए निगम द्वारा प्रदत्त एक बड़ी क्षतिपूर्ति थी। श्री पी. सीता रामबाबू की बच्चियों के लिए यह योजना काफी लाभप्रद रही। अब वो खुद को सुरक्षित महसूस कर सकती हैं।

ये सभी मामले सिर्फ कराबी योजना के द्वारा प्रदान किए गए हितलाभों की झलकियाँ भर हैं। प्रत्येक दिन हजारों ऐसे मामलों में कराबी निगम द्वारा राहत पहुंचाई जाती है। नई प्रोद्योगिकी की मदद से कराबी निगम रोज एक नई ऊचाईयां छू रहा है। खुशी की बात यह है कि यह संगठन सिर्फ और सिर्फ सेवा–भाव से काम करता है।

वर्ष 2023–24 के दौरान प्रदत मुख्य हितलाभ

हितलाभ के प्रकार	भुगतानों की संख्या	प्रदत हितलाभ राशि
बीमारी हितलाभ	18112	रु. 9,51,66,346
अस्थायी अपंगता हितलाभ	179	रु. 23,89,916
स्थायी अपंगता हितलाभ एवं संराशीकरण	16764	रु. 2,58,36,449
आश्रित जन हितलाभ	27192	रु. 10,84,69,268
मेडिकल बोर्ड	2673	रु. 8,17,03,840
प्रसुति व्यय	774	रु. 57,92,500
अंत्येष्टि व्यय	624	रु. 93,60,000
राजीव गांधी श्रमिक कल्याण योजना	135	रु. 72,71,376

वर्ष 2023–24 के दौरान रोजगार चोट के फलस्वरूप हुए
मृत्यु के स्वीकृत मामले – 64

वो दिन ही अच्छे थे

श्री बी.वी. कृष्ण मोहन
सहायक

मैं कल ट्रिप पर नहीं आ सकता

"क्यों?" मैं अपने दोस्त की आवाज में गुस्सा महसूस कर सकता था।

"मुझे एक जरूरी काम है।"

"अरे! पर इस के लिए हमने एक महीने पहले से योजना बनाई थी। हमने इस ट्रिप पर बहुत मस्ती करने का सोचा था।" उसने मुझे समझाने की कोशिश की।

"मुझे समझने की कोशिश कर यार! मैं नहीं आ सकता।" मैंने उसकी तरफ देखे बिना बाइक स्टार्ट कर दी।

दरअसल मुझे कोई उतना जरूरी काम नहीं था लेकिन उस ट्रिप पर जाने में मेरी कोई रुचि नहीं थी। बाइक ट्रैफिक से गुजर रही थी लेकिन मेरे विचार अतीत की गहराई में गोते लगा रहे थे। समय इतनी तेजी से कैसे बदल गया? मुझे पता ही नहीं चला मैं कब इस व्यस्त यांत्रिक जीवन चक्र में फंस गया? कब टेलीविजन मेरा पहला टाइमपास और मोबाइल मेरा सबसे अच्छा साथी बन गया?

वे दिन ही अलग थे जब मैं बिना अपॉइंटमेंट के दोस्तों से मिलता था और बिना किसी शेड्यूल के किसी भी ट्रिप की योजना बना लेता था। उस समय मेरे पास अपनी माँ के साथ बातें करने और अपने भाई–बहनों को चिढ़ाने के लिए बहुत सारा समय होता था। मुझे अपनी दादी की बातें सुनने में भी बड़ा आनंद आता था। मैं रसोई में अपनी माँ की मदद करता था और मैं ऐसा करते हुए कभी नहीं थकता था। ये सब करने में मुझे बहुत मजा आता था। मैं सोशल मीडिया पर पोस्ट किए बिना दिन के हर मिनट का आनंद लेता था। वे दिन थे जब हम किसी दोस्त का कुशलक्षेम पूछने के लिए फोन करने के बजाय सीधे उसका दरवाजा खटखटाते थे बल्कि यह कहें कि रोजाना मिलना–मिलाना होता रहता था। वे ऐसे दिन थे जब मैं चाहता था कि एक दिन 24 घंटे से अधिक का हो।

अब मैं बस हर दिन ऑफिस जाता हूं और उसके बाद शाम वापस आकर सोफे पर बैठ कर अपनी नजरें मोबाइल के स्क्रीन पर गड़ा लेता हूं। आजकल मुझे सोशल मीडिया पर पोस्ट की जाने वाली बकवास देखने के अलावा किसी भी चीज में दिलचस्पी नहीं रहती। इसके अलावा भी इंटरनेट पर न जाने कितनी लुभावनी चीजें हैं आजकल जिसमें मैं खोया रहता हूं। सोचते–सोचते मुझे लगा कि मैं ये कैसा जीवन जीने लगा हूं जहां मैं अपने दोस्तों, सगे–संबंधियों को भूलकर ऐसे लोगों के साथ रहने लगा हूं जिनको मैं जानता भी नहीं, देखा भी नहीं सिर्फ उनकी तस्वीर देखी है। इसी उधेड़बुन में मैं घर पहुँच गया पर साथ ही साथ मुझे यह भी महसूस हुआ कि मैं गलती कर रहा हूं और मैंने यह तय किया कि अब और नहीं। अब मैं अपनी इस गलती को सुधारूंगा। इस यांत्रिक जीवन से बाहर निकलूंगा ।

मैं अपनी जिंदगी पूरे दिल से जीऊंगा। यह निश्चय कर मैंने अपने दोस्त को कॉल लगा दिया । ■

चाह

श्री जगदीश बारिक
सहायक

हम इंसान धरती पर रोते हुए जन्म लेते हैं और हमारा परिचय मां से होता है। हमें तब भी पता होता है कि मां हमें सारी तकलीफों से बचा सकती है। इसलिए अपनी तकलीफ में मां को याद करते हैं, मां को जैसे हमारी तकलीफ का पता होता है और उसकी चेष्टा होती है हमें तकलीफ से मुक्ति देने की। आगे इस प्रक्रिया में पिता भी जुड़ जाते हैं। माता–पिता दोनो मिलकर हमारी परवरिश करते हैं। उनका स्वार्थ हमारी खुशी में ही होता है।

जवानी आने तक हम विभिन्न तरह की प्रक्रियाओं से गुजरते हैं। उस समय तक चाहे जो भी परिस्थिति हो माता–पिता हमारी खुशियों का ध्यान रखते हैं और हमारे लिए कुछ भी त्यागने को तैयार होते हैं। उनकी खुशी सिर्फ हमारी भलाई में होती है। बावजूद इसके हम कभी भी संतुष्ट नहीं होते। हम हमेशा ज्यादा की उम्मीद करते हैं और माता–पिता से नाराजगी भी जाहिर करते हैं, यह कह कर कि आप हमारे लिए क्या करते हैं? हम स्वार्थ में इतने अंधे होते हैं कि उनका त्याग हमें दिखता हीं नहीं। वे और अधिक प्रयास करते हैं क्योंकि यह उनका स्वार्थ भी होता है कि वो हमें खुश देखना चाहते हैं।

जीवन आगे बढ़ता है, बुजूर्गों की इच्छा होती है बहू–बेटा, नाती–नातिन के साथ हंसी–खुशी जीवन यापन की। लेकिन हमेशा यह पूर्ण नहीं होता। क्योंकि इस वक्त हम बच्चे अपना स्वार्थ देखते हैं एवं हमारे हित में जो होता है वही करते हैं। इस तरह बुजूर्गों की इच्छा अधूरी रह जाती है जिससे वे अत्यधिक दुखी हो जाते हैं। हालांकि हमेशा बच्चे गलत नहीं होते, कभी–कभी परिस्थितियां भी गलत होती हैं।

अब तक हम जो बच्चे थे अब बड़े होकर अपने बच्चों के बारे में सोचने लगते हैं। इस तरह हमारा जीवन चक्र चलता रहता है। यहां मैं ये सोचता हूं कि जो माता–पिता हैं उन्हें अपने बच्चों के साथ खुद के बारे में भी सोचना चाहिए ताकि भविष्य में किसी भी विपरीत परिस्थिति के लिए वो तैयार रहें और बच्चों से ज्यादा उम्मीद न करके उन्हें भी अपना जीवन जीने दें। साथ ही जो बच्चें हैं वो सिर्फ खुद का स्वार्थ न देखें। जितना संभव हो अपने माता–पिता का आशीर्वाद लें उनका भी ध्यान रखें तथा सुखमय जीवन व्यतीत करें।

अंत में मुझे यही कहना है कि चाह बुरी बात नहीं पर जिस चाहत से किसी का बुरा हो वह जरुर बुरी होती है। ■

भाषा ही राष्ट्र का जीवन है। – पुरुषोत्तमदास टंडन

मेरा गांव:अनाकापल्ली

सुश्री के.लक्ष्मी प्रत्युशा
उ.श्रे. लिपिक

जब कोई चीज हमसे छूट जाती है तब उसकी उपयोगिता, खूबसूरती और उसके प्रति अपनी चाहत को हम समझ पाते हैं। मैंने भी अपना गांव छूटने पर कुछ ऐसा ही महसूस किया। मेरी निगम में नियुक्ति होने पर मुझे क्षेत्रीय कार्यालय विजयवाड़ा में तैनाती मिली पर यहां आकर मैं अपने गांव को बहुत याद करती थी। हमारे गांव की हरियाली, शांति और सादा–सरल जीवन सबकुछ। सभी का एक–दूसरे के साथ मिलजुल कर रहना। ताजी हवा, गांव के खेत–खलिहान, ताजी सब्जियां और भी बहुत कुछ। हालांकि इसके अलावा भी मेरे गांव की कुछ खासियत है जो आप मेरे लेख से जान पाएंगे।

विशाखापत्तनम का एक उपनगर है अनाकापल्ली जो आंध्र प्रदेश के अनाकापल्ली जिले का मुख्यालय भी है। इसके उपनाम अनियांकापल्ली, अनेकाफल्ले, विजयपुरी, वेनियापाली, कनकपुरी, बेल्लमपट्टनम, इत्यादि हैं। यह पवित्र सारदा नदी के किनारे स्थित है।

यह शहर औद्योगिक रुप से विकासशील है पर ग्रामीण क्षेत्र अभी भी अविकसित हैं। यहां का मूल भोजन चावल होने के कारण यहां की मुख्य फसल धान है। इसके अलावा रागी, ज्वार–बाजरा की खेती भी होती है। यहां कुछ नगदी फसलें भी उगाई जाती

हैं–गन्ना, मूंगफली, तिल और मिर्च इत्यादि। विभिन्न तरह की सब्जियां भी यहां उगाई जाती हैं। यहां गन्ने की इतनी अधिक खेती होती है कि यह स्थान गुड़ के सबसे बड़े बाजार के रुप में विख्यात है। यह भारत का दूसरा बड़ा गुड़ का बाजार है। यह स्थानीय लोगों के आय का बहुत बड़ा साधन भी है।

पर्यटन की दृष्टि से भी हमारे गांव को आप देखें तो नुक्कमा मंदिर, बेंजाना कोंडा एव लिंगाला, कोंडाकरला पक्षी अभ्यारण्य, देवीपुरम हिंदु मंदिर, एनसिएंट बुद्धिस्ट स्टोन मंदिर, थुम्पाला

रिजर्वर एवं कोंडारकला अवा झील इत्यादि यहां के कुछ महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल हैं। सभी स्थल सुंदरता में अद्भुत हैं। नुक्कमा मंदिर में माता नुक्कम्बिका की पूजा होती है। श्री श्री श्री नूकाम्बिका अम्मावरु नौ शक्ति रूपों में से एक

हैं और प्राचीन दिनों में श्री अनघा देवी के नाम से प्रसिद्ध थीं। उगादी त्योहार से एक दिन पहले कोट्था अमावस्या के दिन "नूकलम्मा जाथरा" होती है जो यहां का बहुत बड़ा त्योहार है। बेंजाना कोंडा एव लिंगाला एक बुद्धिष्ट केव है जो चट्टानों को काटकर बनाया गया है, यहां सैंकड़ों स्तुप हैं जो वास्तुकला का एक बेजोड़ नमूना हैं। एनसिएंट बुद्धिस्ट

स्टोन मंदिर भी अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। इससे हमें बौद्ध धर्म के विभिन्न रुपों, उनके क्रमिक विकाश इत्यादि की जानकारी मिलती है। कोंडाकरला पक्षी अभ्यारण्य अपने प्राकृतिक सौंदर्य एवं विभिन्न तरह के पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के झील में नौका विहार का अपना मजा है।

इतना ही नहीं जब हम इसका इतिहास देखते हैं तो पाते हैं कि यह शहर कलिंग वंश द्वारा शासित था बाद में यहां भिन्न–भिन्न राजाओं ने राज किया। स्वतंत्रता आंदोलन से भी यह स्थान अछूता नहीं था। उस दौरान महात्मा गांधी ने यहां का दौरा किया था और बहिष्कार आंदोलन की शुरुआत की थी। गांधीजी ने बेलम बाजार से अपने भाषण की शुरुआत की थी। कुछ अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने भी यहां स्वतंत्रता आंदोलन का अलख जगाया था। बहुत से स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया था। मेरा गांव मेरे लिए दुनियां की सबसे खुबसूरत जगह है पर वास्तव में पर्यटन की दृष्टि से भी इसका अपना महत्व है। इसलिए छुट्टियों में इसकी खुबसूरती का आनंद आप भी ले सकते हैं।

प्रेरणा

श्री वाई. श्रीराम कुमार
सहायक

जीवन चाहे वो कार्यालयीन हो या पारिवारिक, में कभी–कभी हम विभिन्न कठिनाईयों से गुजरते हैं परन्तु सामाजिक प्राणी होने के कारण हमारा एक दायरा होता है जिसमें कुछ लोगों का साथ होता है और ऐसे मुश्किल समय में इनमें से कुछ लोगों का सही परिचय हमें प्राप्त होता है। उनकी योग्यता, उदारता और लीडरशीप इत्यादि का पता चलता है जिससे हम प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते। साथ ही साथ ऐसे लोगों से हमें यह प्रेरणा भी मिलती है कि मनुष्य होने के नाते हमारे अंदर मनुष्यगत कुछ खुबियां होनी चाहिए जो खुद के साथ–साथ हमसे जुड़े लोगों का जीवन भी आनंद से भर दे। भारत रत्न श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, प्रोफेसर सतीश धवन के बारे में कहा करते थे–''जब असफलता मिली तो उन्होंने इसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया और जब सफल हुए तो उस सफलता का श्रेय अपनी टीम को दे दिया'' जो एक विलक्षण नेतृत्व का दुर्लभ गुण है। मैंने भी अपने जीवन में कुछ ऐसा ही अनुभव किया है जिसे मैं इस लेख के माध्यम से आपके साथ साझा कर रहा हूं....

मैं उस समय वित्त एवं लेखा शाखा में तैनात था। किसी वस्तु की बुकिंग करते समय अनजाने में मुझसे गलती हो गई और सी.ए.जी. की ऑडिट टीम द्वारा उस पर आपत्ति जताई गई। हमारी शाखा की उप निदेशक ने इस गलती को सुधारने के लिए सभी स्तरों पर प्रयास किया तथा गलती की सारी जिम्मेदारी अपने उपर ले ली। उन्होंने यह भी कहा कि मेरी टीम बहुत अच्छी है और मुझे उस पर पूरा भरोसा है, भविष्य में आपको इस बात का पता चल जाएगा।

अगले वर्ष मुख्यालय के साथ हो रही वीसी में जब मुख्यालय के उच्चाधिकारियों द्वारा यह कहा गया कि क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा देश का एकमात्र कार्यालय है जिसने बिना किसी त्रुटि के वार्षिक लेखा प्रस्तुत किया है तो उन्होंने सारा श्रेय अपनी टीम को दे दिया और कहा–"बिना किसी त्रुटि के वार्षिक लेखा प्रस्तुत करना मेरी टीम के समर्थन के बगैर संभव नहीं हो पाता"।

अपनी टीम पर उनका भरोसा रखना, हमारा उस पर खरा उतरना बहुत ही सुखद अनुभव था। एक ऐसे अधिकारी का साथ पाने का सौभाग्य प्राप्त करना जो कठिन परिस्थितियों में अपनी टीम के साथ खड़े होते हैं यह भी कम सुखद एवं प्रेरणादायक नहीं था। अब मैं भी अपने जीवन में इस सदगुण को उतारने की चेष्टा करता हूं ताकि किसी के सुखद अनुभव का कारण बन सकूं ।

कराबी योजना संबंधित अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पर विज़िट करें

www.esic.gov.in

@esichq
@esichq
@esichq
@esichq
@esichq
@esichq
@esichq

QR कोड स्कैन करें

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा वर्ष 2022–23 में हिंदी टंकण पत्राचार पाठयक्रम परीक्षा में उतीर्ण प्रशिक्षार्थियों के नाम और उनके प्राप्तांक

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	प्राप्तांक
1.	सुश्री सी.एच. संगमित्र	95
2.	सुश्री के. स्वाति	88
3.	सुश्री एस. लावण्या	84
4.	श्री एम. प्रवीण कुमार	84
5.	श्री एस. अब्दुल करीम	81

राजभाषा पखवाड़ा–2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों की सूची

प्रतियोगिता	पुरस्कार	विजेता	राशि (रुपए मे)
हिन्दी टिप्पण आलेखन	प्रथम	श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी	1800
	द्वितीय	श्री टी. विजय कुमार	1500
	तृतीय	श्री वाई. श्रीराम कुमार	1200
	प्रोत्साहन – I	सुश्री वि. हारिका	500
	प्रोत्साहन – II	श्री जगदीश बारीक	500
हिन्दी निबंध	प्रथम	सुश्री वि. हारिका	1800
	द्वितीय	श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी	1500
	तृतीय	श्री वाई. श्रीराम कुमार	1200
	प्रोत्साहन – I	श्री जगदीश बारीक	500
	प्रोत्साहन – II	श्री जी. प्रवीण	500
राजभाषा ज्ञान	प्रथम	श्री वाई. श्रीराम कुमार	1800
	द्वितीय	श्री आर. शिवाजी	1500
	तृतीय	श्री जगदीश बारीक	1200
	प्रोत्साहन – I	श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी	500
	प्रोत्साहन – II	श्री एस. लावण्य	500
हिन्दी वाक् (संभाषण)	प्रथम	श्री जगदीश बारीक	1800
	द्वितीय	श्री आर. शिवाजी	1500
	तृतीय	सुश्री वि. हारिका	1200
	प्रोत्साहन – I	श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी	500
	प्रोत्साहन – II	श्री जी. प्रवीण	500

अतुल्य पूर्वी गोदावरी

श्री एस. सुरेन्द्र कुमार
उ.श्रे.लि

अक्टुबर के अंत में हमारे कार्यालय में नए अनुवाद अधिकारी ने कार्यग्रहण किया, राजभाषा शाखा के हितलाभ शाखा के साथ लगे होने के कारण हर दिन एक दूसरे से बात हो जाती, कुछेक दिनों के बाद ही उन्होंने गृह–पत्रिका में प्रकाशन के लिए मुझे लेख लिखने को कहा। मुझे कुछ समझ ही नहीं आ रहा था कि अचानक बातों–बातों में मैने उन्हें अपने गृह नगर के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि क्यों न आप अपने शहर के बारें में कुछ लिखें। उनकी यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी क्योंकि मैं काकीनाड़ा का निवासी हूं जो पूर्वी गोदावरी का जिला मुख्यालय है और पूर्वी गोदावरी की सुंदरता अद्भूत है। मैंने लिखना आरंभ किया, थोड़ा समय लगा पर ....

पूर्वी गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश राज्य के सबसे बड़े और सबसे अधिक आबादी वाले जिलों में से एक है। मौर्य, सातवाहन, विष्णु कुंडिन, पूर्वी चालुक्य, चोल, काकतीय, कोंडावेती रेड्डी राजाओं, गजपति, कुतुबशाही विभिन्न राजाओं और फिर ब्रिटिश ने इस पर शासन किया है। पूर्वी गोदावरी जिले का गठन 15 अप्रैल, 1925 को किया गया था। सकल घरेलू उत्पाद के मामले में यह राज्य का सबसे समृद्ध जिला है। यह राज्य का सांस्कृतिक और पर्यटन केंद्र भी है। यह भारत के आंध्र प्रदेश के तटीय आंध्र क्षेत्र में स्थित एक जिला है। इसका जिला मुख्यालय काकीनाड़ा है। 2011 की जनगणना के अनुसार, यह राज्य का सबसे अधिक आबादी वाला जिला है। राजमुंदरी और काकीनाड़ा जनसंख्या की दृष्टि से गोदावरी जिले के दो बड़े शहर हैं। राजमुंदरी जिले (वर्तमान नाम राजमहेंद्रवरम) को 1859 में दो जिलों गोदावरी और कृष्णा में बांट दिया गया था और गोदावरी जिले को 1925 में पूर्व और पश्चिम गोदावरी जिलों में विभाजित किया गया था।

गोदावरी नदी को दक्षिण का गंगा भी कहा जाता है। यह नदी बहुत बड़ी है पर इसका अधिकतर पानी समुद्र में चला जाता था क्योंकि इस पर कोई बांध नहीं था जिससे जिले में सिंचाई के लिए पानी की कमी हो जाती थी। 1850 में एक ब्रिटिश सिंचाई इंजीनियर सर आर्थर थॉमस कॉटन ने गोदावरी नदी पर एक बैराज का निर्माण किया जिसे अभी भी इंजीनियरिंग चमत्कारों में से एक माना जाता है। इसके निर्माण से गोदावरी के डेल्टा क्षेत्र में खेती के लिए बेहतर सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकी। यही कारण है कि गोदावरी जिले के लोग आज भी सर आर्थर कॉटन का धन्यवाद करते हैं।

पूर्वी गोदावरी जिला इको–पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन और इंजीनियरिंग पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है।

इको पर्यटन

वन एवं वन्य जीवों को ईको पर्यटन के अन्तर्गत प्राथमिकता दी गई है। इसके अन्तर्गत यात्रियों को प्राकृतिक क्षेत्रों की यात्रा करवाई जाती है। इसके अन्तर्गत आने वाले प्रमुख स्थल हैं........

मारेडुमिली

जैव विविधता से समृद्ध मारेडुमिली वन पूर्वी घाट का एक भाग है। पर्यटन क्षेत्र मारेडुमिली, बद्राचलम रोड पर है जो मारेडुमिली गांव से लगभग 4 किमी दूर है। जंगल स्टार कैंपसाइट वालमुरु नदी के निकट स्थित है जिसकी धारा बाली–सुग्रीव कोंडा, जिसे रामायण काल के दौरान बाली–सुग्रीव का युद्ध स्थल माना जाता है, को छोड़कर तीन तरफ से बहती है। मारेडुमिली गाँव में 'अभयारण्य वन' नाम का एक विश्राम गृह है जिसका निर्माण 1914 में किया गया था। यह सभी सुविधावों से युक्त है। पर्यटकों के ठहरने के लिए यहां सुइट्स भी उपलब्ध हैं।

कदियाम

राजमुंदरी से लगभग 14 किमी दूर कादियाम में कई हरी–भरी नर्सरी हैं जहां विभिन्न प्रकार के पौधों की प्रजातियां पाई जाती हैं। आगंतुक वहां से विभिन्न प्रकार के पौधे भी खरीद सकते हैं। हर साल जनवरी में आयोजित होने वाला फ्लावर शो देखने लायक होता है। घरेलू उद्यान और कृषि दोनों ही के लिए यहां से पौधों की बहुत सी किस्मों को दुनिया भर में निर्यात किया जाता है।

पापी हिल्स

पापी पहाड़ियाँ राजमुंदरी–भद्राचलम नाव मार्ग में हैं। यह घने जंगलों से घिरा एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है। पापी पहाड़ियों पर एक राष्ट्रीय उद्यान है जिसमें बाघ, तेंदुए, सांबा और चित्तीदार हिरण शामिल हैं। पापी हिल्स में झोपड़ियों में रहने के लिए पैकेज हैं। नाव में यात्रा करते समय सूर्योदय का दृश्य अत्यंत मनोरम होता है।

कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य

यह पूर्वी गोदावरी जिले के मुख्यालय काकीनाड़ा शहर से 18 किमी दूर स्थित है। 35 मैंग्रोव पेड़ों की प्रजातियों और 120 से अधिक पक्षी प्रजातियों के साथ भारत में यह दूसरा मैंग्रोव वन है। गौतमी और गोदावरी नदियों के बैकवाटर्स (अर्थात कम धारा वाला नदी के भाग) में नौकायन किया जा सकता है। यह खारे पानी के मगरमच्छों के लिए भी प्रसिद्ध है। मुख्य आकर्षण 18 किमी लंबा रेत का गड्ढा है ।

कोनासीमा

यह मनमोहकता, सुंदरता, शांति और सुकून का मरूद्यान है जो सभी के लिए एक स्वप्निल पर्यटन स्थल है। बस, ट्रेन या नाव से यात्रा करते हुए आसपास के ग्रामीण इलाकों पर नजर डाली

जा सकती है। यह सबसे उपजाऊ भूमि में से एक है। यह क्षेत्र अपने शानदार परिदृश्य, लहराते नारियल और ताड़ के पेड़ों के लिए जाना जाता है। यह हरियाली और कलात्मक मंदिरों से भी समृद्ध है। एक अन्य विशेष चीज स्थानीय मसालों और ताजा समुद्री भोजन के स्वादिष्ट मिश्रण वाला व्यंजन है।

धार्मिक पर्यटन

धार्मिक पर्यटन से मेरा मतलब मंदिरों, चर्चों या मस्जिदों की यात्रा करना है। पूर्वी गोदावरी अपने विभिन्न समृद्ध मंदिरों और तीर्थस्थलों के लिए विख्यात है। यह समृद्ध परंपरा, विरासत और ऐतिहासिक महत्व का स्थान है। पूर्वी गोदावरी जिले के कुछ प्रसिद्ध तीर्थस्थलों के नाम है:

1. रयाली
2. बिक्कावोलू
3. गोल्लाला ममीदादा
4. कोरुकोंडा
5. शाही मस्जिद आदि.

सांस्कृतिक पर्यटन

सांस्कृतिक पर्यटन अर्थात किसी स्थान की संस्कृति से परिचित होना है। पर्यटन का यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि एक स्थान के लोग इसके द्वारा ही दूसरे स्थान के बारे में जान पाते हैं और वहां के विभिन्न रस्मों–रिवाज, रहन–सहन इत्यादि से परिचित होते हैं। भारत सांस्कृतिक विभिन्नताओं से भरा देश है ऐसे में पर्यटन का महत्व बहुत ही बढ़ जाता है। यहां के कुछ महत्वपूर्ण महोत्सव है:

1. काकीनाड़ा बीच महोत्सव
2. कोनासीमा महोत्सव
3. मन्यम जतारा

इंजीनियरिंग पर्यटन

इस जिले में इंजीनियरिंग के भी कई चमत्कार हैं जो वाणिज्य, परिवहन और विकास के लिए अत्यधिक

महत्वपूर्ण हैं। इससे पर्यटक यहां के तकनीकी ज्ञान से भी परिचित होंगे। ज्ञान और मनोरंजन के अलावा जिले के विकास में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका का भी पता चलता है। ऐसे कुछ महत्वपूर्ण चमत्कार है:–

1. सड़क सह रेलवे पुल
2. हैवलॉक ब्रिज
3. आर्च ब्रिज
4. कॉटन ब्रिज

मैंने पूर्वी गोदावरी जिले के बारे में अधिक से अधिक जानकारी अपने लेख द्वारा देने की कोशिश की है। उम्मीद है आप सभी को यह जानकारी और मेरा लेख दोनों ही पसंद आया होगा। भविष्य में पर्यटन की इच्छा होने पर सहायक भी होगा। ■

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। – बालकृष्ण शर्मा "नवीन"

आंध्र प्रदेश में कराबी योजना एक नजर में

(वर्ष 31.03.2023 के अनुसार)

	विजयवाड़ा क्षेत्रीय कार्यालय	विशाखापत्तनम उप–क्षेत्रीय कार्यालय	तिरुपति उप–क्षेत्रीय कार्यालय
नियोक्ताओं की कुल संख्या	33417	17467	13826
बीमित व्यक्तियों की कुल संख्या	632060	395250	289610
लाभार्थियों की कुल संख्या	2452393	1533570	1123687
बीमित महिलाओं की कुल संख्या	179558	87799	81716
शाखा कार्यालयों की कुल संख्या	08	05	06
चिकित्सकों वाला कराबी निगम औषधालय सह शाखा कार्यालय	01	02	01
कराबी राज्य अस्पतालों की कुल संख्या	02	01	01
कराबी निगम अस्पतालों की कुल संख्य	01	NIL	NIL

क्र.सं	जिले का नाम	कार्यान्वयन की स्थिति	31.03.2023 तक जिले में आई.पी. की स्वीकृत संख्या	जिले में स्थित शाखा कार्यालयों/डी.सी बी.ओ का नाम	जिले में स्थित औषधालयों के नाम
1	विजयवाड़ा क्षेत्राधिकार पूर्वी गोदावरी	पूर्णतः क्रियान्वित	12745	1.बी.ओ– राजमुंड्री 2.बी.ओ – काकीनाड़ा	1. काकीनाड़ा 2. सर्पवरम 3. समालकोट 4. दावलेश्वरम 5. कडियाम 6. लालाचेरुवु 7. इन्सपेटा 8. सीथमपेटा
2	पश्चिम गोदावरी	पूर्णतः क्रियान्वित	43932	1.बी.ओ – तणुकु 2.बी.ओ – एलुरु	1. कोव्वुरु 2. वेन्द्र 3. भीमावरम 4. निडदवोलु 5. तणुकु 6. ताडेपल्लीगुडेम 7. एलुरु
3	कृष्णा	पूर्णतः क्रियान्वित	222989	1.बी.ओ – ऑटो नगर 2.बी.ओ – गांधीनगर	1. बापुलपाडु(वीरावल) 2. मछलीपट्टनम 3. गंगूर 4. ऑटोनगर 5. गुणदला 6. दुर्गापुरम 7. सत्यनारायणपुरम 8. भवानीपुरम 9. कोंडापल्ली 10. जग्गैयापेट

4	गुंटूर	पूर्णतः क्रियान्वित	91636	डी.सी.बी.ओ – गुंटूर	1. पेदकाकानी, 2. उंडावल्ली, 3. पी.वी थोटा, 4. देवपुरम, 5. नल्लापदु 6. माचेरला, 7. गनापवरम (चिलकलुरिपेटा), 8. डी.सी.बी.ओ–गुंटूर
5	प्रकाशम	पूर्णतः क्रियान्वित	35911	बी.ओ– ओंगोल	1. मार्कापुरम 2. चिराला 3. मार्टूर 4. ओंगोल
6	नेल्लोर	पूर्णतः क्रियान्वित	110204	बी.ओ – नेल्लोर	1. ए.के.नगर (नेल्लोर), 2. नवाबपेट (नेल्लोर), 3. पडुगुपाडु 4. गुडूर 5. सुल्लुरपेटा 6. तडा
			विशाखापत्तनम क्षेत्राधिकार – उप क्षेत्रीय कार्यालय		
1.	श्रीकाकुलम	पूर्णतः क्रियान्वित	15957	डी.सी.बी.ओ– श्रीकाकुलम	1. डी.सी.बी.ओ– श्रीकाकुलम 2. प्यदिभीमावरम
2.	विजयनगरम	पूर्णतः क्रियान्वित	42507	1. बी.ओ– श्रीराम नगर 2. बी.ओ – विजयनगरम	1. गरिविदी 2. बोब्बिली 3. नेल्लीमर्ला 4. कोठवलासा
3.	विशाखापत्तनम	पूर्णतः क्रियान्वित	337084	1. बी.ओ – विशाखापत्तनम 2. बी.ओ– गजुवाका 3. बी.ओ– चित्तिवलासा 4. डी.सी.बी.ओ. – अनाकापल्ली	1. अचुतपुरम 2. चित्तिवलासा 3. मदिलापलेम 4. गजुवाका 5. गोपालपटनाम 6. गांधीग्राम 7. इंडस्ट्रियल एस्टेट 8. कुरमनपालेम 9. पेदगन्त्याडा
			तिरुपति क्षेत्राधिकार – उप क्षेत्रीय कार्यालय		
1.	चित्तूर	पूर्णतः क्रियान्वित	158693	1. बी.ओ– चित्तूर 2. डी.सी.बी.ओ– तिरुपति 3. बी.ओ– मदनपल्ली	1. मदनपल्ली 2. तिरुपति 3. रेनिगुंटा 4. श्रीकालाहस्ती 5. चित्तूर 6. बंगरायपालेम 7. नागरी
2.	अनंतपुरम	पूर्णतः क्रियान्वित	64446	1. बी.ओ– हिन्दुपुर 2. बी.ओ– अनंतपुर	1. नंतपुरम 2. ताडिपत्रि 3. गुंतकल 4. हिन्दुपुर
3.	कडपा	पूर्णतः क्रियान्वित	30665	1.बी.ओ– कडपा	1. कडपा 2. येरागुंटा 3. प्रोद्दूरू 4. कोदुर
4.	कुरनूल	पूर्णतः क्रियान्वित	35437	1. बी.ओ– कुरनूल	1. बुधावरपेटा (कुरनूल) 2. गोंडीपार्ला (कुरनूल) 3. येम्मिगनूर 4. अदोनी, पूर्व 5. अदोनी, पश्चिम 6. नांदयाल

"वार्षिक कार्यक्रम" के अन्तर्गत वर्णित कुछ महत्वपूर्ण मद

क्र.सं./Sl.No.	कार्य–विवरण/Details of Work	लक्ष्य/Target
1.	हिंदी में मूल पत्राचार/Original Correspondence in Hindi 'क','ख' तथा 'ग' क्षेत्र के केंद्र सरकार/निगम कार्यालयों/शाखाओं को To Central Govt-/Corporation Offices/ Branches of 'A', 'B' & 'C' Regions 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयों/व्यक्तियों को To Offices / individuals in States/U-Ts of the 'A' & 'B' Regions	55% 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देना/ Letters received in Hindi should be replied in Hindi	100%
3.	फाईलों में हिंदी टिप्पणियां लिखना/Writing noting in Hindi on Files-	30%
4.	हिंदी में डिक्टेशन (अधिकारियों द्वारा)/Dictation in Hindi (By Officers)	30%
5.	राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन–इस धारा के अंतर्गत 14 प्रकार के दस्तावेज द्विभाषी रूप में जारी करना Compliance of Section 3(3) of the Official Language Act 1963 & issuing 14 types of documents as per the Section in Bi-lingual form-	100%
6.	नियम 10(4) का अनुपालन–सभी सूचियां, विवरणियाँ, सामान्य भविष्य निधि/अवकाश/गृह–निर्माण अग्रिम/चिकित्सा–बिल आदि हिंदी में लिखना/Compliance of Rule 10(4) – All Schedules, Statements, G.P.F., Leave, H.B.A, Medical Bills should be written in Hindi	100%
7.	फाईलों और रजिस्टरों के शीर्षक, विषय, प्रमाण–पत्र, प्रविष्टियां आदि हिंदी में लिखना/Headings, Subjects, Certificates, entries etc of Files and Registers should be written in Hindi	100%
8.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का द्विभाषी रूप में प्रदर्शन/Display of Citizen Charters & Public Notice Boards in Bi-lingual	100%
9.	रबड़–मोहरों, नाम–पट्ट, सूचना–पट्ट आदि द्विभाषी रूप में रखना / **Rubber stamps, Name-Plates, Notice-Boards etc should be in Bi-lingual form**	100%
10.	निगम के विज्ञापन और प्रचार सामग्री, अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में जारी करना/Issuing of Advertisements & Publicity material of Corporation in Hindi in addition to English	50%
11.	फॉर्म और मानक मसौदे द्विभाषी रूप में होना/Forms and Standard drafts should be in Bi-lingual form.	100%

सम्मान एवं पुरस्कार

नियोजक संबंधी आंकड़ों का शोधन/अद्यतन करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन

श्री कट्टा लक्ष्मी बाबू
सहायक

श्री पुचला ताता राव
सहायक

श्री अजीज खान
सहायक

श्री गांधी नायक
सहायक

श्री प्रशांत कुमार दासारी
सहायक

श्रीमती सिमहाद्री लावण्या
सहायक

श्री प्रसाद राव
प्रवर श्रेणी लिपिक

सुश्री पोलामारासेट्टी लक्ष्मी प्रत्युशा
प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री बोरा गोविन्दा राव
अवर श्रेणी लिपिक

श्री गूरजला कोटेश्वर राव
अवर श्रेणी लिपिक

क्षेत्रीय कार्यालय के शीर्ष तीन शाखा कार्यालय
कार्य निष्पादन की दृष्टि से (2023–24)

क्र.सं.	शाखा कार्यालय का नाम	प्राप्त स्थान
1	तनुकु	प्रथम
2	नेल्लोर	द्वितीय
3	काकीनाड़ा	तृतीय

आधार सीडिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन

श्री चेलिकानी नागार्जुना
सहायक

श्री पेययाला वेंकट सुधीर
सहायक

श्री मोका चीना वेंकटेश्वर राव
प्रवर श्रेणी लिपिक

विशेष पुरस्कार श्रेणी में उत्कृष्ट प्रदर्शन

श्री बक्की मनोज कुमार
कार्यालय अधीक्षक

श्री एम. विजय कुमार
सहायक

श्री मुम्मिदी प्रवीण कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री के. गणेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

उच्चाधिकारियों द्वारा प्रयुक्त कुछ सामान्य टिप्पणियां

हिंदी	English
यथा–प्रस्तावित अनुमोदित	APPROVED AS PROPOSED
कृपया चर्चा करें	PLEASE SPEAK
यथा–प्रस्तावित	AS PROPOSED
संबंधित कागजात के साथ चर्चा करें	DISCUSS WITH PAPERS
मसौदे से सहमति है	DRAFT IS CONCURRED IN
वित्तीय सहमति दी जाती है	FINANCIAL CONCURRENCE IS ACCORDED
मैं सहमत हूं	I AGREE
अनुमोदन के साथ लौटाया जाता है	RETURNED DULY APPROVED

कर्मचारियों द्वारा प्रयुक्त कुछ सामान्य टिप्पणियां

हिंदी	English
मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है	DRAFT PUT UP FOR APPROVAL PLEASE
मसौदा अवलोकन एवं अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।	DRAFT PUT UP FOR PERUSAL AND APPROVAL PLEASE
स्वच्छ पत्र हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत है ।	FAIR LETTER IS PUT UP FOR SIGNATURE PLEASE
कार्योत्तर मंजूरी हेतु प्रस्तुत ।	PUT UP FOR EX-POST-FACTO SANCTION
मसौदा तदनुसार संशोधित कर लिया गया है ।	DRAFT HAS BEEN AMENDED ACCORD-INGLY
सूचना के लिए प्रस्तुत है।	PUT UP FOR INFORMATION
आदेश के लिए प्रस्तुत है ।	PUT UP FOR ORDER PLEASE
सुझाव के लिए प्रस्तुत है।	PUT UP FOR SUGGESTION PLEASE
आगे की कार्रवाई के लिए प्रस्तुत है।	PUT UP FOR FURTHER ACTION
विचारार्थ प्रस्तुत है ।	PUT UP FOR CONSIDERATION PLEASE
आपके अनुमोदन की प्रत्याशा में।	IN ANTICIPATION OF YOUR APPROVAL
मुझे यह कहना है।	I AM TO SAY
का अनुपालन करते हुए ।	IN COMPLIANCE WITH
जनहित में।	IN PUBLIC INTEREST
कृपया अनुदेश दें।	INSTRUCTION ARE SOLICITED
कृपया मामले पर पुनर्विचार करें।	KINDLY REVIEW THE CASE
उपर्युक्त विषय पर।	ON ABOVE SUBJECT

नराकास द्वारा पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, विजयवाड़ा के तत्वावधान में दिनांक 18.12.2023 को केन्द्रीय विद्यालय संस्थान–1 में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में श्री वेंकट रंगा राव मामिड़ी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की जनवरी, 2024 की बैठक में यह पुरस्कार उन्हें आशा महेश कुमार, सदस्य सचिव (नराकास) द्वारा प्रदान किया गया।

मंडाला कला

मंडाला कला हिंदू और बौद्ध परंपराओं से उत्पन्न दृश्य कला का एक जटिल प्रतीकात्मक रूप है। संस्कृत में शाब्दिक अर्थ 'सर्कल' है, मंडल गोलाकार डिजाइन है जो ब्रहमांड का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये नश्वरता और आत्मज्ञान जैसी आध्यात्मिक अवधारणाओं को दर्शाते हैं। उनके जटिल पैटर्न अंहकार को पार करने और उच्च चेतना प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करते हैं।

सुश्री वि. हारिका द्वारा बनाए गए इन चित्रों को मंडाला कला के नाम से जाना जाता है।

सुश्री वि हारिका,
उ.श्रे.लि.

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा का विहंगम दृश्य

सुविधा समागम

एकता दिवस शपथ

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

स्वच्छता पखवाड़ा 2024

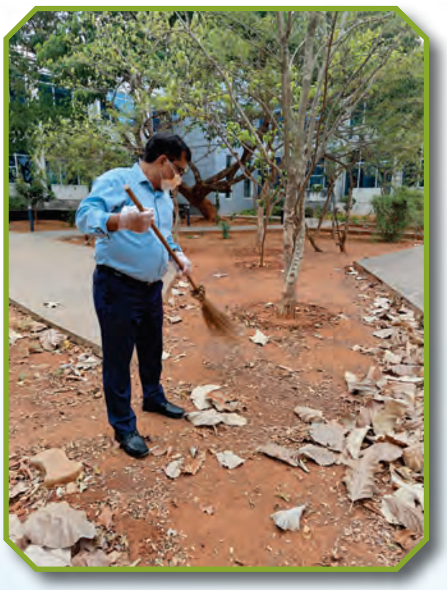

Sintex

राजभाषा पखवाड़ा समारोह – 2023

शाखा प्रबंधकों की बैठक

हिंदी जिस दिन राजभाषा स्वीकृत की गई इसी दिन से सारा कामकाज हिंदी मे चल सकता था। – सेठ गोविन्द दास

कराबी निगम हितलाभ

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
Ministry of Labour & Employment, Government of India
स्थायी विकलांगता और आश्रितजन हितलाभ की दर में वृद्धि
ईएसआई बीमाकृत कामगारों एवं आश्रितजनों के लिए स्थायी विकलांगता हितलाभ (पीडीबी) और आश्रित हितलाभ (डीबी) की दर में वृद्धि
स्थायी विकलांगता और आश्रितजन हितलाभ की प्रिशोधित दरें 01.08.2022 से लागू
@esichq www.esic.gov.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
Ministry of Labour & Employment, Government of India
ईएसआई योजना के अंतर्गत
रोज़गार के दौरान चोट लगने के कारण शारीरिक निःशक्तता के मामले में शारीरिक पुर्नवास हितलाभ
बीमाकृत व्यक्ति जब तक कृत्रिम अंग केंद्र में भर्ती रहता है, तब तक अस्थायी निःशक्तता हितलाभ की दर से भुगतान
औसत दैनिक मजदूरी का 100% भुगतान
शारीरिक पुनर्वास हितलाभ
@esichq www.esic.gov.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
Ministry of Labour & Employment, Government of India
ईएसआई योजना का बीमारी हितलाभ
भुगतान दर
औसत दैनिक मजदूरी का 70%
देय अवधि
लगातार दो हितलाभ अवधियों में 91 दिनों तक
अंशदान की शर्त
तदनुरूपी अंशदान अवधि में 78 दिनों के लिए अंशदान का भुगतान
@esichq www.esic.gov.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
Ministry of Labour & Employment, Government of India
ईएसआईसी जानकारी ही जागरूकता है
ईएसआई योजना को जानें
निःशक्तता हितलाभ
बीमाकृत व्यक्ति/महिला को चोट लगने की स्थिती में मिलता है निःशक्तता हितलाभ
अस्थायी या पूर्ण स्थायी निःशक्तता के मामलों में 90 प्रतिशत की दर से औसत दैनिक मजदूरी भुगतान की सुविधा
आंशिक स्थायी निःशक्तता की स्थिती में कमाने की क्षमता में हुए नुकसान के अनुपात में नगद हितलाभ उपलब्ध
@esichq www.esic.gov.in

ईएसआईसी हितलाभ

कराबी निगम उप क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम में आधार सीडिंग

वार्षिक निवारक स्वास्थ्य जांच

वरिष्ठ नागरिकों के लिए घर बैठे सैम्पल कलेक्शन की सुविधा सहित वार्षिक निवारक स्वास्थ्य जांच

घरों तक दवाओं की डिलीवरी

पुरानी बीमारियों से पीड़ित ईएसआई लाभार्थियों के लिए घरों तक दवाओं की डिलीवरी की सुविधा

AAA+ मोबाइल ऐप

सभी ईएसआईसी अस्पतालों में घर बैठे **ओपीडी अपॉइंटमेंट** लेने के लिए AAA+ मोबाइल ऐप

कीमोथेरेपी सेवाएँ

हब और स्पोक मॉडल के तहत **30 ईएसआईसी अस्पतालों** में कीमोथेरेपी सेवाओं का प्रारंभ

धनवंतरी ऐप

अस्पताल के **कर्मचारियों एवं डॉक्टरों के लिए इन-पेशेंट प्रबंधन**, बेड साइड वाइटल एंट्री, रोगी के डिस्चार्ज की जानकारी और कार्य सूची में सहायता के लिए धनवंतरी मोबाइल ऐप

ई-संजीवनी

ई-संजीवनी के माध्यम से **ईएसआई चिकित्सा सेवाओं** का अभिसरण एवं प्रारंभ

5G एम्बुलेंस सेवा

टेलीमेडिसिन और ई-आईसीयू की सुविधाओं के साथ 5G तकनीक द्वारा सक्षम एम्बुलेंस सेवाएं

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment
Government of India

Regional Office
ESI Road, Gunadala, Vijayawada-520004
Telephone: 0866-2453498
Email : rd-andhrapradesh@esic.gov.in
Toll-Free No.1800-11-2526, Medical Helpline No. 1800-11-3839
Website: www.esic.gov.in

esic.nic.in @esichq @esichq @esichq @esichq @esichq